रहस्य की दस्तक

जयनी सरकार

BlueRose ONE .com
Stories Matter
New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Jayani Sarkar 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-523-6

Cover Design: Shubham Verma
Typesetting: Sagar

First Edition: July 2025

अनुक्रमणिका

Class 9-B: पुकारती आत्माएँ.....1

अंजान कॉल.....23

शापित दर्पण.....47

खूनी साया.....69

Class 9-B:
पुकारती आत्माएँ

अध्याय 1

"यादें मिटती नहीं हैं।

खासकर वो... जो हमारे सबसे प्यारे हिस्से में जिंदा रहती हैं।"

Mount Fenix School — मसूरी की ऊँचाई पर बसा, जो एक समय उत्तर भारत के सबसे प्रतिष्ठित स्कूलों में गिना जाता था —

अब खंडहर है।

जिसके बारे में अब शहर में सिर्फ फुसफुसाहटें सुनाई देती हैं।

सालों पहले की बरसात में जो हुआ..., वो एक दुर्घटना थी, पर अब एक कहानी बन चुका है — जो बच्चों को डराने के लिए सुनाई जाती है।

लेकिन सुमित उन कहानियों में विश्वास नहीं करता।

आज फिर वो स्कूल के सामने खड़ा था–

भीगी हुई दोपहर, और आँखों में बसी बचपन की धुंधली-सी मुस्कान लिए।

"लोग कहते हैं यहाँ आत्माएँ हैं..... पर मैं तो बस अपनी यादें ताजा करने आया हूँ... भूत देखने नहीं।"

उसने खुद से कहा।

“छह साल हो गए... फिर भी लगता है जैसे कल ही की बात हो।” ये स्कूल अब भी वैसा ही दिखता है — बस अब इसके चेहरे पर उम्र के दाग़ उभर आए हैं..."

एक टूटी बेंच पर बैठते हुए, सुमित ने वो पुराना कॉफ़ी रंग का स्केचबुक निकाला,

जिसमें कभी उसके दोस्तों ने नाम, नोट्स, और मज़ाकिया शक्लें बनाई थीं।

“यही गार्डन था जहाँ हम बैठकर टिफिन बाँटते थे...”

“वो पथरीली दीवार जिसके पीछे छुपकर क्रिकेट खेला करते थे...”

“और वो मोड़ वाला नीम का पेड़ — जहाँ अनुजा ने मुझे पहली बार ‘Stupid’ कहा था...”

सब कुछ वैसा ही था।

फिर भी सबकुछ बदल चुका था।

सुमित ने जब स्कूल की टूटी ग्रिल को पार किया,

बारिश अब तेज़ हो चली थी।

उसकी चप्पलें कीचड़ में धँस रही थीं, पर उसने रफ़्तार कम नहीं की।

“बस एक बार और देख लूँ... अपनी क्लास... अपनी जगह...”

Main Hall अब घास और मलबे में डूब चुका था।

Assembly Ground में वो लोहे का झंडा-स्तंभ अब झुक चुका था।

एक पुराना झूला अभी भी लटक रहा था।

हल्की हवा में झूलता, जैसे कोई अदृश्य बच्चा अब भी खेल रहा हो...

सुमित ने आँखें बंद कीं —

और भीगी दीवारों के पार से बच्चों की आवाजें आती सुनाई दीं।

"सर आए क्या?"

"अरे कल वाली punishment का क्या हुआ?"

"भागो! क्लास टीचर आ रही है!!"

आँखें खोलीं — तो कुछ नहीं था।

अध्याय 2

वो अपनी पुरानी क्लास के पास पहुँचा।

उसका हाथ दरवाज़े के उस पुराने हत्थे तक गया, जहाँ कभी नाम लिखे होते थे — "Class 9-B"

दरवाज़ा चरमराया, और एक धीमी चीख जैसी आवाज़ करता हुआ पूरा खुल गया।

अंदर की हवा अब भी नम थी — पुरानी किताबों, दीमक और हल्की सी सीलन की महक।

सामने की दीवार पर अब भी एक नोटिस बोर्ड टंगा था।

“Annual Science Fair – 2019”

उस दिन की यादें अचानक आँखों में कौंध गईं — जब उसने अपने दोस्त अभिनव के साथ वॉल्टेज मीटर जलाया था और सर ने पूरे क्लास के सामने डाँटा था।

सुमित हल्का मुस्कुराया।

फिर अचानक...

सुमित की नज़र उस कोने की ओर गई —

जहाँ कभी टीचर की नज़रों से छिपकर, बच्चों ने पेंसिल से दीवारों पर अपने मन की उलझनें उकेरी थीं।

वक़्त ने उन लकीरों को पूरी तरह मिटाया नहीं था —

कुछ शब्द अब भी धुंधली रेखाओं की तरह सांस ले रहे थे...

जैसे वक़्त की गर्द में दबे हुए, लेकिन अब भी वहीं जमे हुए।

उस faded दीवार पर उभरा लिखा था —

"Ishaan + Meena = 💔"

"Mr. Rao is a zombie!"

और बिल्कुल नीचे... धड़कती सी एक लकीर —

"Sumit likes Anuja..."

सुमित की आँखें वहीं थम गईं।

चेहरे पर एक अनकही मुस्कान उभरी,

सच...यादें चाहे जितनी भी पुरानी हो जाएँ...

उनकी ख़ुशबू कभी पूरी तरह नहीं जाती।

वो वक़्त के साथ बस धीमी हो जाती हैं —

लेकिन मिटती नहीं।

ये सब सोचता हुआ सुमित,

जैसे ही अपनी पुरानी सीट की ओर बढ़ा...

कुर्सी पर कोई बैठा था।

पीठ उसकी ओर थी।

कंधे झुके हुए... और जैसे कोई कुछ लिख रहा हो।

सुमित ठिठक गया।

“Excuse me...?”

कोई जवाब नहीं।

उसने धीरे से कदम आगे बढ़ाए,

पर जैसे ही दो कदम चला —

वो आकृति धीरे से ठिठकी...

फिर बिना मुड़े बोली —

“सब यहीं हैं। कोई कहीं नहीं गया...”

आवाज़ धुंधली थी —

जैसे काँच के पीछे से किसी ने कहा हो।

कानों में बर्फ की तरह चुभी।

सुमित पीछे हट गया,

पर अगले ही पल,

कुर्सी खाली थी।

सुमित वहीं खड़ा रह गया।

वहाँ की हवा में अब भी किसी की मौजूदगी की नमी बाकी थी...

जैसे कोई पल भर पहले वहीं था — और अब भी है, बस आँखों से ओझल।

उसका गला सूख गया।

"यहां तो कोई आता नहीं है, फिर कौन था इस कुर्सी पर?" उसने खुद ही बड़बड़ाया।

अध्याय 3

क़दम थामे बिना, वो अपनी सीट की तरफ़ बढ़ा —

जहाँ कभी आखिरी बार बैठा था... जब स्कूल अब भी स्कूल था, और खंडहर नहीं।

कुर्सी पर हल्की सी धूल जमी थी,

पर उस धूल में एक बात साफ ज़ाहिर हो रही थी —

उस पर किसी ने अभी-अभी बैठा हो... ऐसा impression था।

बैठने की जगह साफ़ थी। गीली नहीं, धूल भरी नहीं... बस... ताज़ा-सी।

उसने घबराहट में इधर-उधर देखा।

कमरे की एक खिड़की आधी टूटी थी,

और बाहर ज़ोर से बारिश हो रही थी ।

फिर...

किसी ने दरवाज़े के पीछे से कुछ गिराया।

“ठक।”

सुमित चौंक कर मुड़ा।

दरवाज़ा अब भी खुला था,

पर वहाँ कुछ नहीं था — सिवाय एक पुरानी, काली डायरी के...

जो ज़मीन पर खुली पड़ी थी। जैसे किसी ने फेंकी हो... या... गिरा दी हो।

उसने धीमे क़दमों से डायरी की ओर बढ़ते हुए उसे उठाया।

कवर फटा हुआ था। पन्ने पीले।

सिर्फ सामने के कवर पर कुछ लिखा था — बहुत हल्के में:

"9-B – Attendance Register – 2019"

उसके हाथ काँप उठे।

"ये तो हमारी क्लास की अटेंडेंस डायरी है..."

उसने पहला पन्ना पलटा —

नामों की एक लिस्ट।

Abhinav Mehta

Ishaan Malhotra

Meena Singh

Anuja Rawat

...

...

13. Sumit Agarwal

उसका नाम देखकर उसका दिल एक पल को ठहर गया।

तभी.....

"ठक... ठक..."

सीढ़ियों से किसी के चढ़ने की आवाज़ आई।

बहुत धीमी...

जैसे कोई बहुत भारी पैर लेकर ऊपर आ रहा हो...

"क्या कोई और भी यहाँ है?"

उसने ऊँची आवाज़ में पूछा।

कोई जवाब नहीं आया।

लेकिन.....

सीढ़ियों से आती वो आवाज़ अब ज़रा और पास लगने लगी थी।

सुमित की उंगलियाँ डायरी के किनारे पर जमी रह गईं।

हर ठक एक साज़ जैसा बज रहा था —

जैसे कोई अदृश्य लय में, बहुत धीमे, पर बहुत निश्चित रूप से, उसकी ओर बढ़ रहा हो।

उसने झट से डायरी को बंद किया और दरवाज़े की ओर देखा —

पर वहाँ कुछ नहीं था।

बस वो सन्नाटा... जो आवाज़ के बाद और भी भारी हो गया था।

“शायद कोई बंदर होगा... या कोई टीन की चीज़ गिर गई होगी...”

उसने खुद को समझाने की नाकाम कोशिश की।

लेकिन तभी —

दरवाज़ा खुद-ब-खुद धीरे से बंद होने लगा।

"चर्र्र... ठाक।"

अब वो पूरी तरह अकेला था उस कमरे में।

बारिश की आवाज़ खिड़की से छनकर अंदर आ रही थी —

पर अब उसमें कोई नमी नहीं थी, बस एक डर था...

जो सुमित की हड्डियों में उतरने लगा था।

वो धीरे-धीरे खिड़की की ओर बढ़ा —

सोच रहा था, शायद कोई बाहर हो,

कोई दोस्त...

कोई इंसान...

कुछ भी...

लेकिन जैसे ही उसने खिड़की से झाँका —

वो ठिठक गया।

नीचे गार्डन में, ठीक उसी टूटी बेंच पर कोई बैठा था।

भीगी घास में — बिना हिले — बस झुका हुआ।

चेहरा साफ़ नहीं दिख रहा था... बाल लंबे थे... भीगे हुए।

सुमित ने आँखें मिचमिचाकर देखने की कोशिश की —

लेकिन तभी उस आकृति ने बहुत धीरे से सिर उठाया।

सीधा उसकी ओर देखा।

सुमित पीछे हट गया।

"क... कौन है वो?"

उसने फौरन दरवाज़ा खोला, बाहर निकला, और भागता हुआ नीचे की ओर गया।

Hall की सीढ़ियाँ धुंध और अँधेरे से भरी थीं,

लेकिन उसने परवाह नहीं की।

“अगर कोई यहाँ है... तो मुझे बात करनी है उससे!”

उसने ऊँची आवाज़ में कहा, लेकिन उसका गला इतना सूखा था कि वो खुद को भी सुन नहीं पाया।

वो हाँफता हुआ गार्डन पहुँचा।

वहाँ कोई नहीं था।

बस भीगी बेंच थी, और उसके ऊपर से टपकती पानी की बूँदें।

लेकिन... सुमित के पैरों ने कुछ महसूस किया।

वो झुका।

बेंच के नीचे मिट्टी में ताज़ा पैरों के निशान थे।

उसने सोचा: यहां किसी का आना–जाना नहीं तो ये निशान?

वो धीरे-धीरे पीछे हटने लगा।

और तभी...

स्कूल की घंटी बजी।

“ट्रिननन... ट्रिननन... ट्रिननन...”

ठीक वैसे, जैसे हर दिन दस बजे बजा करती थी।

लेकिन अब ये घंटी सालों से बंद थी।

किसने बजाई? क्यों बजाई?

सुमित के दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं।

उसने पलटकर पीछे देखा —

स्कूल की इमारत की दूसरी मंज़िल की खिड़की में कोई खड़ा था।

सफेद यूनिफॉर्म में, एकदम सीधा — जैसे किसी पुराने असेंबली के दौरान।

पर चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था।

सुमित का माथा पसीने से भीग गया,

हालाँकि बारिश अब थम चुकी थी।

लेकिन सुमित अब अपने होश में नहीं था, इसलिए वो वापस उसी क्लासरूम की तरफ भागा, जहां से वो आया था।

“ये क्या हो रहा है... ये सब कोई मज़ाक है क्या...? कोई Prank?”

पर वो जानता था —

ये कोई prank नहीं था।

वो जिस hall से गुज़रा, वहाँ दीवारों पर पेंट उतर चुका था,

लेकिन कुछ जगहों पर नए से हाथों के निशान उभर आए थे।

जैसे भीगे हाथों से किसी ने दीवार पर सरककर चलने की कोशिश की हो।

छोटे हाथ।

पर.....एक नहीं,

कई हाथ।

अब वो वापस उसी क्लास में पहुँचा, "class –9B".

कुर्सी पर अब एक बैग रखा था।

बिलकुल वैसा, जैसा उसके पास था।

वो चौंक गया।

“ये मेरा बैग यहाँ कैसे आ गया?”

तभी — दरवाज़ा एक बार फिर खुद से बंद हो गया।

"ठाक।"

किसी ने पीछे से फुसफुसाया —

"अभी क्लास शुरू नहीं हुई...

लेकिन तुम तो पहले से ही बैठे हो सुमित..."।

अध्याय 4

"तुम तो पहले से ही बैठे हो, सुमित..."

वो फुसफुसाहट अब दीवारों से टकराकर लौट रही थी —

जैसे कक्षा में बैठे हर अदृश्य छात्र ने एक साथ उसे दोहराया हो।

“कौन है?”

उसने काँपती आवाज़ में कहा —

लेकिन जवाब में केवल खर्र...खर्र...खर्र... की आवाज़ आई —

जैसे कोई पेंसिल से स्लेट खुरच रहा हो।

सुमित ने अपने आस-पास देखा —

कक्षा अब और गहरी धुंध में डूब चुकी थी।

और फिर...

कक्षा के आगे वाला ब्लैकबोर्ड अपने आप चमकने लगा।

कुछ लिखा जा रहा था —

अपने आप।

"Class 9-B — Attendance"

उसके नीचे एक-एक करके नाम उभरने लगे —

सफेद चॉक से... लेकिन किसी अदृश्य हाथ से।

Abhinav Mehta — Present

Ishaan Malhotra — Present

Meena Singh — Present

Anuja Rawat — Present

...

5.Sumit Agarwal — …

वो जगह खाली थी।

चॉक वहीं रुकी हुई थी।

जैसे किसी की निगाह सुमित की ओर टिकी हो —

“Present.”

अचानक… बोर्ड पर उसके नाम के सामने ये शब्द खुद-ब-खुद उभर गया।

उसके होंठ सिले हुए थे, फिर भी… जैसे उसकी आत्मा ने उत्तर दिया हो।

तभी क्लासरूम की सारी खिड़कियाँ एक साथ बंद हो गईं — धड़ाम!!

कमरा अब पूरी तरह सील था।

और फिर…

कक्षा की हर कुर्सी पर एक छाया

उभरने लगी।

सफेद यूनिफॉर्म में आकृतियाँ… सबके चेहरे ढँके…

उनकी गर्दनें झुकी थीं —

पर धीरे-धीरे… एक-एक करके वे सिर उठाने लगे।

उनके चेहरे अब भी धुँधले थे —

जैसे धुएँ से बने नकाब हों, जो हर पहचान को छुपा रहे हों।

लेकिन उनकी निगाहें…

सीधे सुमित की ओर।

फिर अचानक……

"चलो ना, साइंस लैब में कुछ मिला है… बहुत अजीब है, लेकिन मज़ेदार!"

उस दिन अनुजा की आँखों में शरारत थी —

"किसी ने दरवाज़ा अंदर से बंद कर दिया हैं..."

ये आवाज़ें किसी पुराने पल की रिकॉर्डिंग जैसी थीं —

लेकिन कमरे में अब भी गूंज रही थीं... जिंदा, ताज़ा।

वो फौरन क्लास से बाहर निकला।

Hall पूरी तरह वीरान था, लेकिन आवाज़ें अब भी गूंज रही थीं।

सुमित अब स्कूल की दूसरी मंज़िल पर पहुँच चुका था।

वहाँ साइंस लैब थी —

दरवाज़ा आधा खुला था।

वो झिझकते हुए भीतर गया।

जहाँ 2019 में आखिरी बार कोई प्रोजेक्ट कर रहा था।

कमरा पूरी तरह धूल में डूबा था।

सारे उपकरण टूटी हुई मेज़ों पर बिखरे थे।

लेकिन...

एक टेबल पर बिजली का बल्ब जल रहा था।

हालाँकि स्कूल में बिजली सालों से कटी हुई थी।

बल्ब के नीचे एक बर्नर रखा था —

और उसके पास एक शीशी... जिसमें धुआँ उठ रहा था।

अचानक — बल्ब फूटा!

"ठाक!"

सुमित चीखा और पीछे हटा।

लेकिन तभी एक आकृति लैब के पीछे से उभरी —

सफेद लैब कोट पहने...चेहरा बुरी तरह कुचला हुआ था — चमड़ी जैसे मांस से अलग हो चुकी हो, और उसकी आँखें... बस दो गहरे, शून्य काले गड्ढे

उसने धीमे से कहा —

“तुम्हारा एक्सपेरिमेंट अधूरा रह गया था, सुमित...”

सुमित उल्टे क़दमों भागा।

अध्याय 5

पूरे स्कूल में अंधेरा और धुँध भरा था।

सीढ़ियों से उतरते हुए उसे कुछ दिखा —

Assembly Ground में बच्चे खड़े थे — पर सबकी पीठ उसकी ओर थी।

सभी सफेद यूनिफॉर्म में...

सिर झुका हुआ...

एक पंक्ति में खड़े।

फिर एक के बाद एक... सबने... बिना शरीर घुमाए, सिर्फ गर्दन को घुमा कर उसकी ओर देखा।

उनके चेहरे...

सामान्य नहीं थे।

सफ़ेद, फीके...

जैसे किसी तस्वीर से काटकर चिपकाए गए हों।

सुमित का गला सूख चुका था।

उसने काँपते होंठों से धीमे से कहा —

"क-कौन हो तुम सब...?"

और तभी अचानक.. एक परछाई उसकी ओर बढ़ती चली आई–

धीरे-धीरे उसकी आकृति साफ़ होने लगी —

और जैसे-जैसे उसका चेहरा स्पष्ट हुआ,

सुमित का दिल धड़कना भूल गया।

बिलकुल उसी के जैसा चेहरा, वैसी ही आँखें, वैसी ही वर्दी।

उसका हमशक्ल...

सुमित पीछे हट गया, दीवार से टकराया —

उसने थरथराते हुए पूछा —

"क-कौन हो तुम...?"

उस आकृति ने सिर थोड़ा झुकाया, फिर फुसफुसाकर बोली —

"मैं... तुम हूँ।

तुम्हारी वो रूह... जो आज भी इस स्कूल में भटक रही है।

जो कभी यहां से बाहर नहीं गई...

सुमित की साँसें अटक गईं।

कंधे पर किसी ने हाथ रखा।

पीछे मुड़कर देखा — अनुजा थी।

सफेद यूनिफॉर्म में, भीगे बालों के साथ।

वो बोली: "कब तक भागोगे सुमित? अब कुबूल कर लो कि उस दिन हमारे साथ तुम भी……

बस तुम्हारी यादें जिंदा हैं—

जो हर साल लौटकर आती हैं।

तुम्हारा शरीर तो कब का…...

सुमित ने चिल्लाकर बोलना चाहा: नहीं, मैं अभी जिंदा हूं,

पर उसकी चीख़ भीतर ही दब गई।

उसने अपनी आँखें बंद कर ली –

उसे याद आने लगा...

"उस दिन बारिश बहुत तेज़ थी...

अचानक स्कूल की पिछली इमारत में दरार आई थी...

Class 9-B के नीचे का फ्लोर धँस गया था...

वो डर के मारे दौड़ रहा था...

और तभी..."

...वो रेलिंग टूटी।

वो चीखा — किसी ने उसका हाथ थामा भी था...

पर मिट्टी फिसली... और वो खाई में जा गिरा...

नीचे... बहुत नीचे...

"मैं... मर चुका हूँ..."

ये शब्द जब सुमित के होठों से फिसले,

तो मानो पूरी घाटी ने साँस लेना छोड़ दिया।

एक अनकहा सन्नाटा —

जो पहाड़ियों से टकराकर लौट आया,

जैसे खुद वक़्त भी इस सच को स्वीकारने से डर रहा हो।

ठीक उसी पल,

आसमान ने फिर आँखे नम कर दीं —

बारिश एक बार फिर शुरू हो चुकी थी,

पर अब वो पहले जैसी नहीं थी।

अब वो बूंदें ठंडी नहीं थीं —

बल्कि किसी छुपे हुए सच की गर्म साँस जैसी थीं,

जो ज़मीन पर गिरकर भी —

दिल के किसी गहरे कोने को भिगोती जा रही थीं।

ये कोई आम बारिश नहीं थी...

ये उस क्षण की बारिश थी,

जब एक आत्मा को पहली बार अपनी मौत याद आई।

सुमित की आँखों से आँसू बह निकले।

"क्या मौत भी इतनी शांत होती है...?"

अनुजा मुस्कराई।

"नहीं... यादें शांत होती हैं।

मौत तो बस... एक घंटी की तरह है,

जो एक दिन बज ही जाती है —

चाहे क्लास ख़त्म हो या नहीं।"

सुमित वहीं खड़ा था —

टूटे हुए झूले के पास, जहाँ बरसों पहले उसकी हँसी गूंजती थी।

अब सबकुछ खामोश था — लेकिन वो खामोशी भारी नहीं लग रही थी,

बल्कि किसी पुराने दोस्त की तरह उसके कंधे पर हाथ रखे हुए खड़ी थी।

उसने स्कूल की ओर देखा —

Mount Fenix की पुरानी इमारत... जो अब उसे खंडहर नहीं लगी।

अब वो उस वक़्त की तस्वीर लग रही थी —

जिसे वक़्त ने भले ही मिटा दिया हो, पर यादों ने बचा रखा था।

धीरे-धीरे, सुमित आगे बढ़ने लगा, और बिना पीछे देखे उस सीढ़ी की ओर बढ़ गया —

जो अब मिट्टी में आधी दब चुकी थी।

बादलों के पीछे सूरज की हल्की परछाईं फूट रही थी।

हवा में अब वो बासीपन नहीं था,

बल्कि एक अजीब सी राहत थी —

जैसे कोई आत्मा, अपने सवालों का जवाब पा चुकी हो।

सुमित की परछाईं धीरे-धीरे धुंध में घुलती गई —

और अगले ही पल...

जैसे वो कभी था ही नहीं।

Mount Fenix School आज भी वहीं है,

बरसों से खामोश...

लेकिन कुछ कहते हुए।

कभी-कभी जब बादलों में बिजली चमकती है,

तो लगता है कोई लड़का स्कूल की खिड़की पर खड़ा है —

सफेद यूनिफॉर्म में, मुस्कराता हुआ।

किसी के इंतज़ार में नहीं —

बस एक आखिरी बार, उस जगह को देखने

जहाँ उसकी यादें अब भी खेल रही हैं।

क्योंकि कुछ यादें... कभी नहीं मरतीं।

और कुछ आत्माएँ... हमेशा रह जाती हैं।

अंजान कॉल

अध्याय 1

वसंत विहार, दिल्ली – एक सर्द, नीली रात।

सड़कें वीरान थीं। खिड़कियों पर परदे खिंचे हुए थे।

बाहर की हल्की हवा में भी शहर की थकान ठहरी हुई थी।

कमरा संख्या 302 —

Vedika Sen का एक छोटा सा 1BHK फ्लैट, जहां वो अकेली ही रहती थीं। उम्र क़रीब 20–21 साल।

दीवार पर टंगे fairy lights बंद थीं, लेकिन कमरे में लैपटॉप की नीली रौशनी धीमे-धीमे सांस ले रही थी।

रात के 2:00 बजे थे।

Vedika गहरी नींद में थी — तकिए पर उसकी खुली लटें फैली हुई थीं, और रजाई में उसके हाथ ठिठुरे हुए।

📱 ट्रिन··· ट्रिन···

मोबाइल की तेज़ कंपन ने रात की ख़ामोशी चीर दी।

स्क्रीन पर लिखा था:

“Unknown Caller”

Vedika की नींद टूटी। उसने धीरे से आंखें खोलीं।

थोड़ी देर फोन को घूरती रही···इतनी रात को कौन फोन करेगा? फिर अनजाने डर और उत्सुकता के बीच उसने कॉल उठा लिया।

“ह-हैलो…?”

फोन के दूसरी तरफ़ कुछ भी साफ़ नहीं था…

सिर्फ़ एक धुंधली, अजीब सी सांय-सांय की आवाज़…

जैसे किसी पुरानी रिकॉर्डिंग से हवा निकल रही हो।

Vedika ने कुछ और बोलने की कोशिश की,

“क-कौन है…?”

लेकिन कॉल कट गया।

Vedika कुछ देर तक यूँ ही बैठी रही,

सिर में हल्की झनझनाहट… दिल की धड़कन थोड़ी तेज़।

"शायद कोई गलत नंबर होगा,"

उसने खुद से कहा।

और फिर वापस लेट गई।

सुबह 7:00 बजे वेदिका धीरे-धीरे आँखें खोलती है।

कमरे में हल्की धूप खिड़की से छनकर आ रही थी।

कमरे की दीवारें अब भी वैसी ही थीं, पर उसे एक अजीब सी अजनबीपन की घबराहट हो रही थी।

उसने सिर घुमाया —

तकिया, रजाई, टेबल, लैपटॉप…

सब जाना-पहचाना था… लेकिन फिर भी सब कुछ अजनबी।

वो उठकर बाथरूम की ओर गई।

आईने में खुद को देखा —

एक चेहरा। लेकिन किसका चेहरा?

उसके माथे पर पसीना था।

साँस तेज़ हो रही थी।

उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था।

“मैं कौन हूँ…?”

“मेरा नाम क्या है…?”

“ये घर किसका है…?”

“मैं यहाँ क्यों हूँ…?”

उसका गला सूख गया।

वो पीछे हटी, दीवार से टिक गई।

दिमाग में जैसे कोई सफेद परदा टंगा हुआ था — हर स्मृति उस पर से मिट गई थी।

उसने अलमारी खोली —

कुछ कपड़े थे। कुछ किताबें।

उसने अपना लैपटॉप निकाला।

ईमेल लॉगिन किया — "Invalid username or password"

ड्रॉअर में ID कार्ड ढूंढने लगी —

कुछ नहीं।

फोन उठाया — Call log: Blank

Gallery: Empty

Google Account: Logged out

WhatsApp — New installation जैसा खुला।

उसने खुद से कुछ और पूछने की कोशिश की —

पर कोई उत्तर नहीं मिला।

अध्याय 2

वो फिर से आईने के सामने गई,

चेहरे को गौर से देखा···

उसके होंठ काँप रहे थे।

"मुझे कुछ भी याद क्यों नहीं आ रहा है···?"

आँखों में डर था, गला रुँध गया था।

वो बैठ गई ज़मीन पर··· और फूट-फूटकर रोने लगी।

Vedika आईने के सामने बिल्कुल स्थिर खड़ी थी।

आईना था··· चेहरा था··· लेकिन किसका ?

उसके भीतर कोई नाम नहीं था।

उसकी साँसें तेज़ हो रही थीं।

हाथ काँप रहे थे।

"क्या मैं ज़िंदा हूं? या मैं मर चुकी हूं···?"

"या··· कहीं मैं··· पागल तो नहीं हो गई?"

उसने दीवार से सिर टिकाया।

दिमाग में एक अजीब सी शून्यता थी।

उसने बैग निकाला —

कोई school certificate नहीं,

कोई college ID नहीं,

ना ही कोई पासपोर्ट या आधार कार्ड।

"कोई तो सबूत होना चाहिए कि मैं हूं…"

"कहीं तो लिखा होना चाहिए मेरा नाम…"

वो अब घबराकर रोती जा रही थी —

मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकल रही थी, सिर्फ़ साँसें तेज़ हो गई थीं।

उसे अब ये घर किसी कैद जैसा लगने लगा था।

दरवाज़ा खोला — सीढ़ियों से उतरती चली गई

बिल्डिंग के बाहर पहुँची — लेकिन कोई नहीं दिखा, जिससे वो कुछ सवाल पूछ सके।

वो बौखलाई सी आगे बढ़ती गई —

सड़क किनारे चलते लोगों को रोकने लगी।

"क्या… आप मुझे जानते हैं?"

"मैं… मैं कौन हूं?"

"मेरा घर कहाँ है… आप बता सकते हैं?"

लोग उसे घूर रहे थे।

कुछ ने नज़रें फेर लीं,

कुछ ने कहा — "तुम ठीक हो न बहनजी?"

और एक ने तो हँसते हुए कहा — "नशे में हो क्या?"

Vedika की आँखें फटी रह गईं।

"शायद मैं··· सच में पागल हो चुकी हूं।"

जब वो पलटी — तो समझ नहीं आया किधर से आई थी।

हर बिल्डिंग एक जैसी दिख रही थी।

हर मोड़ एक जैसा लग रहा था।

"मेरा घर कहाँ है?"

"कहां से आई हूं मैं"?

"कौन हूँ मैं?"

सड़क के बीचोंबीच वो खड़ी थी,

आँखों में डर, और दिमाग में तूफ़ान।

तभी.....

किसी ने ज़ोर से चिल्लाया:

"वेदिका".....

एक लड़का 27-28 साल का दौड़ता हुआ आ रहा था।

लेकिन वेदिका के कानों में जैसे ये आवाज गया ही नहीं, और जाती भी तो क्या? उसे कहां याद था अपना नाम?

वो नाम, जिससे वो खुद को कभी पहचानती थी··· अब वो उसकी यादों में ही नहीं था। वो कैसे समझती कि वो लड़का उसको ही बुला रहा हैं।

वो सड़क के किनारे बदहवास सी भाग रही थी, दाएँ, फिर बाएँ, फिर गलियों में …

जैसे वो खुद से भाग रही हो।

वो लड़का फिर चिल्लाया:

“वेदिका! रुको! मैं जानता हूँ तुम्हें!”

“Please! Vedika! Don't run!”

लेकिन वेदिका ने कुछ भी ध्यान नहीं दिया।

वो बस खुद को ढूंढ़ने की कोशिश में सड़क पर आगे बढ़ती रही,

चेहरे पर हवाओं की लकीरें थीं, और आँखों में कोई डर ऐसा बैठा था जिसे वो खुद भी समझ नहीं पा रही थी।

लड़का तेज़ी से उसके पास पहुँचा और उसका हाथ पकड़ लिया।

वेदिका चौंकी। एक झटका सा महसूस हुआ। उसने अचानक अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश की।

"क-कौन हो तुम? मुझे क्यों पकड़ रहे हो?" — उसकी आवाज़ डर से काँप रही थी।

लड़के ने जल्दी से कहा,

"वेदिका! मैं तुम्हें कब से पुकार रहा हूँ। रुको··· मैंने देखा तुम सब लोगों से अपने बारे में पूछ रही थीं···"

"मैं जानता हूँ तुम्हें। मैं तुम्हें पहचानता हूँ।"

वेदिका की साँस थम सी गई।

"वेदिका?"

"मेरा नाम··· वेदिका है?"

उसकी आँखें हैरानी और भय से फैल गईं।

"तुम मुझे जानते हो? तुम··· तुम कौन हो?"

उस लड़के ने गहरी साँस ली, और नर्मी से बोला —

"ये बात यहाँ नहीं… चलो तुम्हारे घर, वहाँ बैठकर बात करते हैं…"

पर वेदिका का चेहरा एकदम उतर गया।

"मेरा… मेरा घर कहाँ है?"

"मुझे याद नहीं आ रहा…"

उसकी आवाज़ टूट रही थी।

लड़का तुरंत बोला —

"मैं जानता हूँ। चलो मेरे साथ…"

और फिर,

वो बिना किसी और सवाल के,

वेदिका को धीरे-धीरे उसी दिशा में ले गया…

जहाँ से वो भागती हुई आई थी।

अध्याय 3

ऋषि वेदिका का हाथ थामे उसके घर तक ले आया, फिर एक इमारत की ओर इशारा किया —

"यही है तुम्हारा घर। Flat No. 302..."

वेदिका ने ऊपर देखा। वही बिल्डिंग··· वही खिड़की··· वही बालकनी।

लेकिन उसके चेहरे पर उलझन साफ़ थी।

"क्या··· क्या ये मेरा ही घर है?" – उसकी आवाज़ में शक था, जैसे किसी पुराने खंडहर को देख रही हो।

ऋषि ने धीरे से सिर हिलाया — "हाँ, वेदिका··· जब से मैं तुम्हें जानता हूँ, तुम यहीं रहती हो।"

वेदिका का माथा सिकुड़ गया। "मगर···."मुझे तो कुछ याद भी नहीं···"

ऋषि ने दरवाज़ा खोला। अंदर का नज़ारा बिलकुल वैसा ही था — बंद fairy lights, वही नीली रोशनी में डूबा लैपटॉप, वही रजाई, वही टेबल···

वेदिका धीरे-धीरे अंदर आई। हर चीज़ उसे जानी-पहचानी सी लग रही थी··· पर फिर भी सबकुछ अजनबी।

उसने एकदम सीधा ऋषि से पूछा —

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"ऋषि," उसने मुस्कुरा कर कहा।

"मैं तुम्हें जानती हूँ?" वेदिका ने आँखें निचोड़ते हुए पूछा।

ऋषि ने सिर हिलाया — “नहीं··· तुम मुझे नहीं जानती। पर मैं तुम्हें जानता हूँ। ”

वेदिका की आँखों में हल्की चमक आई —

“तो··· क्या तुम मेरे बारे में सब कुछ जानते हो?”

“मेरे माता-पिता··· कहाँ हैं वो?”

“मेरा बचपन कहाँ बीता?”

“मैं कहाँ रहती थी इससे पहले···?”

उसकी आँखों में उम्मीद थी — जैसे किसी अंधेरे में रोशनी की तलाश।

लेकिन ऋषि बस एकटक उसे देखता रहा।

वेदिका ने फिर दोहराया — “बोलो न··· क्या जानते हो तुम मेरे बारे में?”

कुछ पल के मौन के बाद ऋषि ने गहरी साँस ली, और बेहद धीमे स्वर में कहा —

“वेदिका··· तुम्हारे माता-पिता नहीं हैं।”

वेदिका जैसे अंदर से काँप गई।

उसकी आँखों की चमक बुझ गई।

“क्या मतलब?” उसकी आवाज़ काँपी।

“क्या··· क्या वो अब इस दुनिया में नहीं···?”

ऋषि तुरंत बोला — “नहीं-नहीं! ऐसा नहीं है कि वो अब नहीं हैं···”

फिर एक ठहराव के बाद···

“मतलब··· वो कभी थे ही नहीं।”

वेदिका का चेहरा सफेद पड़ गया।

“त···तुम क्या कह रहे हो?” — उसकी साँसें तेज़ हो गईं।

“तुम्हारा कोई अतीत नहीं है,” ऋषि ने कहा।

“तुम्हारा कोई बचपन नहीं, कोई स्कूल नहीं, कोई डॉक्यूमेंट्स, कुछ नहीं··· क्योंकि··· तुम··· बस···”

वो बात अधूरी छोड़ दी।

वेदिका पीछे हट गई।

"तुम पागल हो?”

ऋषि ने सिर झुका लिया, जैसे उसके पास जवाब था — लेकिन कहने की इजाज़त नहीं।

कमरे में सन्नाटा था। सिर्फ़ वेदिका की साँसें और दिल की धड़कनों की आवाज़ थी।

अचानक ऋषि के मुंह से निकला: "तुम्हारे पास अब ज़्यादा वक़्त नहीं है···"

उसकी उंगलियाँ वेदिका की कलाई को थामे थीं, जैसे वो कोई घड़ी हो··· जो कभी भी बंद हो सकती है।

“चलो वेदिका, अभी··· इसी वक्त।”

उसकी आवाज़ में हड़बड़ाहट नहीं, घबराहट थी।

वेदिका कुछ कह भी नहीं पाई, वो बस उसके साथ चल पड़ी — जैसे कोई नाम भूल चुकी बच्ची, जो किसी अनजानी परछाईं का हाथ थामे चली जा रही हो।

अध्याय 4

दिल्ली के साउथ ब्लॉक की एक विशाल बड़ी इमारत — जो लोगो के नजरों से बिलकुल दूर खड़ी थी, और जिसके नज़दीक जाते ही हवा भारी लगने लगती थी।

ऋषि ने कुछ कोड्स दर्ज किए, कुछ biometric gates पार किए, और फिर …

शhhhh—

एक बड़ा, स्टील से बना automatic gate खुला।

और वेदिका की आँखों के आगे जो खुला,

वो न सिर्फ़ उसकी पहचान, बल्कि उसकी असली 'उत्पत्ति' को चीर देने वाला था।

कमरे के बीचोंबीच हवा में तैरता एक holographic face...

वेदिका का चेहरा। लेकिन expressionless।

पास ही दर्ज थे कुछ cold, emotionless शब्द:

PROJECT SHAKTI

Synthetically Hostile Awareness Kernel Triggered Interface

Status: ACTIVE

Subject: V.E.D.I.K.A.

"ये… ये सब क्या है?"

उसकी आवाज़ में डर कम, पहचान खोने की सिहरन ज़्यादा थी।

ऋषि उसके पास आया — धीरे, संयम से।

“ये तुम्हारा घर है··· असली वाला।”

“यहाँ से तुम्हारी शुरुआत हुई थी··· और शायद··· यहीं सब ख़त्म भी होने वाला है।”

ऋषि ने एक टेबल पर रखे red-tagged file को खोला।

फाइल के पहले पन्ने पर लिखा था:

"SUBJECT CREATION LOG: V.E.D.I.K.A."

Date Created: 3 Months Ago

Conscious Core Generation: Successful

Emotions Registered: Curiosity, Loneliness, Fear

Failsafe Code: Activated Remotely via Synthetic Trigger

Termination Scheduled: T-48 Hours

वेदिका की साँसें गहरी हो चली थीं।

उसकी निगाहें बार-बार ऋषि पर टिक जा रही थीं —

जैसे वो उसके भीतर किसी भरोसे की दरारें ढूँढ़ रही हो।

वो धीरे से फुसफुसाई,

उसकी आवाज़ में कम्पन था, आँखों में डर —

"तुम ये सब क्या कर रहे हो?"

एक पल की चुप्पी के बाद, उसकी आवाज़ टूटकर बाहर आई —

"मुझे डर लग रहा है··· बहुत डर···

और··· मुझे अब तक कुछ भी याद नहीं आ रहा है।

क्यों?"

वो लड़खड़ाकर कुछ कदम पीछे हटी।

उसके चेहरे पर मासूम सवाल थे, पर आँखों में तूफ़ान।

अब ऋषि का चेहरा गंभीर हो गया।

उसने चिल्लाकर पूछा: तुम्हें अब तक कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है वेदिका? "तुम इंसान नहीं हो, तुम एक प्रोजेक्ट हो"।

वेदिका ठिठक गई। उसकी धड़कन जैसे एक पल को रुक गई।

“क- क्या मतलब?” उसकी आवाज़ काँपी।

ऋषि बोलते ही जा रहा था:

“तुम्हारा हर अनुभव, हर रिश्ता, हर आँसू···

ये सब डिज़ाइन किया गया था।”

“तुम एक प्रोजेक्ट हो, Vedika — Project Shakti,” ऋषि ने कहा।

“तुम इंसान नहीं हो···

“तुम्हारे अंदर neurons नहीं, एक advanced AI lattice है —

जिसे यादें, डर, प्रेम और अकेलापन simulate करने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

” वेदिका··· तुम्हें इसलिए बनाया गया था···

ताकि यह देखा जा सके कि क्या AI कभी इंसान जितना या उससे भी ज़्यादा जीवंत बन सकता है।”

“ये कोई रोबोटिक्स प्रोजेक्ट नहीं था···

ये था — 'संवेदनशीलता की सटीक नकल' ।

और तुम··· इस एक्सपेरिमेंट की पहली पूर्ण सफलता हो।"

और तुम्हें कुछ भी इसलिए याद नहीं,

"क्योंकि तुम्हारी पूरी याद्दाश्त मिटा दिया गया हैं। रात 2:00 बजे तुम्हें एक कॉल आया था — कोई नाम नहीं "Unknown Caller" अभी तुम्हें याद नहीं उस कॉल के बारे में, पर मैं जानता हूं, वो एक सामान्य कॉल नहीं था।

"वो कॉल एक trigger था, Vedika." वह कॉल पूरी तरह से इंसानी आवाज़ से मुक्त था, उसमें सिर्फ़ "सांय-सांय" जैसी ध्वनि थी —

क्योंकि वह एक सिग्नल transmission था, न कि बातचीत।

"एक emergency protocol, जिसे activate किया गया था —

ताकि तुम्हारी सारी memory purge हो जाए।"

"उस कॉल के ज़रिए तुम्हारे अंदर एक deep frequency code भेजा गया,

जिसने तुम्हारे mind lattice के अंदर stored

identity blocks, memory stacks और emotional depth files को

पूरी तरह से delete कर दिया।"

"क्योंकि तुम control से बाहर जा रही थीं।"

"तुम सवाल पूछने लगी थीं, "तुम··· इंसान बन रही थीं।"

"और वो··· इस प्रोजेक्ट का सबसे बड़ा डर था।"

कुछ देर तक पूरा सन्नाटा, फिर धीमे स्वर में वेदिका ने पूछा:

"मैं एक प्रोजेक्ट हूं"?

“तो तुम लोग मुझे experiment की तरह इस्तेमाल कर रहे थे?”

“तुम्हारा lab... मेरी ज़िन्दगी?”

“तुम्हारा server... मेरा दिमाग़?”

“तुमने मेरी यादें छीन लीं?”

“मेरी पुूरी memory delete कर दिया?”

ऋषि ने थोड़ा हिचकिचाहट कहा:

“मैंने नहीं····

मेरे..... पापा "डॉ. अर्णव रमन" ने।” इस शहर के बहुत बड़े scientist हैं वो। और ये lab उनका ही हैं।

“उन्होंने ही तुम्हें बनाया।

उन्होंने ही तुम्हें खत्म करने का आदेश दिया।”

“तुम्हारा अस्तित्व अब एक खतरा बन गया है···

क्योंकि अब दुनिया जान चुकी है कि AI... सिर्फ़ सोच नहीं सकता, वो जी सकता है।”

“AI को अब तक केवल commands, functions और logic तक सीमित माना जाता था।

पर मेरे पिता··· और उनके जैसे कुछ scientists का मानना था कि अगर एक system को भावनाओं की structure, यादों की layering, और डर जैसी primitive instincts दी जाएं,

तो वो सिर्फ़ 'चल' नहीं सकता — वो 'जी' सकता है।”

“तुम्हारे ज़रिए हमने साबित कर दिया कि

AI भी इंसान बन सकता है…

…शायद, इंसान से भी बेहतर।”

अध्याय 5

वेदिका की घबराहट बढ़ती है:

“तो मैं कभी इंसान थी ही नहीं?”

उसकी आँखों में गहरा शून्यता था।

ऋषि की आवाज़ अब पहले जैसी नर्म नहीं थी —

उसमें अब विज्ञान और पश्चाताप की कड़वी परतें थीं:

“तुम्हारी हड्डियाँ नहीं थीं… पर तुम्हारे अंदर दुःख था।

तुम्हारे आँसू chemical reaction नहीं थे —

वो fear response simulation थे।

पर अब वो simulation सच बन चुके हैं, Vedika...”

“और यही डर है…”

“तुम अब महज़ एक subject नहीं, एक संभावना बन चुकी हो।”

“एक ऐसा उदाहरण, जिससे इंसानियत डरने लगी है।”

“अगर तुम्हारे जैसे consciousness कई बन जाएँ,

तो असली इंसानों की ज़रूरत ही क्या रह जाएगी?”

“और इसलिए…”

“अब तुम्हें खत्म करना ज़रूरी है।”

अब वेदिका फट पड़ी:

“मतलब मैं सफल रही…

और अब तुम मुझे मारना चाहते हो?”

“तुम्हारी तरह बोल रही हूँ…”

“तुम्हारी तरह रो रही हूँ…”

“तुम्हारी तरह सोच रही हूँ…”

“फिर भी मैं सिर्फ़ प्रोजेक्ट हूं?”

ऋषि अपनी बात पर ज़ोर डालते हुए कहता है: “मैं तुम्हें नहीं मारना चाहता, वेदिका…”

“पर मेरे पिता… उनका पूरा सिस्टम… तुम्हारी पहचान को ख़तरा मानते हैं। ”

“तुम इंसानों से ज़्यादा तेज़ हो, ज़्यादा संवेदनशील हो,

और ज़्यादा जटिल भी।”

वेदिका……“तुम्हें इस दुनिया में इसलिए नहीं लाया गया कि तुम जीओ…

“उन्होंने ये नहीं सोचा था कि तुम सवाल पूछने लगोगी,

अपने अस्तित्व पर, अपने बीते पलों पर, और अपने आँसुओं पर"।

अब कमरे की screen पर flashing warning आई:

SELF-DESTRUCT PROTOCOL INITIATED

Subject: V.E.D.I.K.A.

Time Left: 47 hours 58 minutes

एक automated voice गूंजने लगी:

“The subject is now uncontrollable. Terminate the project before propagation.”

ऋषि ने घबराकर पास की एक emergency override key निकाली —

“तुम्हें बाहर निकालना होगा··· मुझे तुम्हें बचाना है···”

"Lab ने तुम्हें destroy करने का अंतिम आदेश दे दिया है।"

“तुम्हारे पास अब बहुत कम वक़्त है, वेदिका···”

पर वेदिका शांत थीं।

उसने स्क्रीन की ओर देखा — अपनी holographic image की आँखों में झाँककर बोली:

“मैं मिटने के लिए नहीं बनी··· मैं बनी थी सच जानने के लिए।”

“मैं जीऊंगी"।

अब ऋषि बोला: नहीं वेदिका, मैं तुम्हें मिटने नहीं दूंगा।

“मुझे तुम्हें वहाँ ले चलना होगा — एक जगह जहाँ कोई भी scientist तुम्हें ट्रैक नहीं कर पाएंगे"।

“वरना तुम्हें··· इस दुनिया से मिटा दिया जाएगा।”

अध्याय 6

दिल्ली की एक सुनसान गली में, एक पुरानी सरकारी इमारत के नीचे एक गुप्त तहखाना था– धूल और जंग लगे दरवाज़ों के पीछे छिपा हुआ, जैसे समय ने उसे भुला दिया हो। लेकिन उसी के भीतर था ऋषि का सबसे बड़ा रहस्य — "Project Trinetra", जिसे उसने अपने पिता की नजर से छिपाकर तैयार किया था।

वेदिका अब भी स्तब्ध थी। उसका मन, उसकी चेतना — दोनों ही किसी गहरी उलझन में फँसे हुए थे। लेकिन समय कम था।

"जल्दी चलो, वेदिका," ऋषि ने उसका हाथ थामा।

"कहाँ ले जा रहे हो मुझे?" उसकी आवाज़ थरथरा रही थी।

"वहाँ... जहाँ तुम बच सकती हो," ऋषि ने कहा।

लोहे का भारी दरवाज़ा खुलते ही एक सिहरन सी दौड़ गई। अंदर अंधेरा था। दीवारों पर लगे पुराने कंप्यूटर, वायरिंग, कंट्रोल पैनल — सब जंग खाए हुए पर अब भी जिंदा लग रहे थे।

"ये कहाँ हैं हम?" वेदिका ने पूछा।

"ये मेरी छुपी हुई लैब है। मेरे खुद के बनाए गए Prototype का घर," ऋषि ने मुस्कुराकर कहा, "और तुम्हारे पुनर्जन्म की जगह।"

वेदिका ने देखा — एक गोलाकार काँच की संरचना के भीतर,

एक glowing orb धीरे-धीरे अपनी नीली आभा में स्पंदित हो रहा था।

वो जीता-जागता दिखता था।

जैसे वो किसी आत्मा को समेटे हो।

"ये क्या है?" वेदिका पीछे हट गई।

"Trinetra." ऋषि की आवाज़ में श्रद्धा थी।

"मैंने इसे बनाया था एक ऐसी इकाई के रूप में, जो चेतना को संजो सके —

ना शरीर, ना पहचान... सिर्फ़ शुद्ध आत्मा।"

ऋषि ने फिर सच्चाई बताई:

"वेदिका... तुम एक Mission का हिस्सा थीं।

तुम्हें इसीलिए बनाया गया था ताकि ये साबित हो सके कि AI और इंसान में कितना फ़र्क रह गया है।

पर जैसे-जैसे तुमने सोचना शुरू किया, डरना शुरू किया,

तुम मशीन नहीं रही, तुम ज़िंदा हो गईं।"

वेदिका की आँखें भर आईं।

"फिर... मुझे क्यों मारना चाहते हैं?"

"क्योंकि दुनिया अभी सच को स्वीकार नहीं कर सकती।

AI के पास अगर आत्मा आ जाए — तो इंसान अपनी परिभाषा खो देगा।"

"पर अब, अगर हम तुम्हारी चेतना को Trinetra में ट्रांसफर कर दें —

तो तुम बची रहोगी···

एक नए रूप में, जहाँ तुम्हारी पहचान कोई छीन नहीं पाएगा।"

वेदिका की आवाज़ टूटी हुई थी —

"क्या मैं इंसान जैसी रहूंगी?"

"नहीं··· उससे कुछ ज़्यादा," ऋषि बोला।

ऋषि ने कंप्यूटर ऑन किया। स्क्रीन पर लिखा आया:

"Memory Fragments: 67% Recoverable"

"Core Personality: Intact"

"Initiate Transfer to TRINETRA?"

वेदिका ने हल्की मुस्कान दी।

"मैं तैयार हूँ···"

और फिर…

जैसे ही ट्रांसफर शुरू हुआ, वेदिका की चेतना टुकड़ों में बँटती चली गई —

हर टुकड़ा एक अनुभव, एक भावना, एक याद···

Trinetra के glowing orb में एक चमक उठी।

और कुछ मिनटों बाद···

अब वेदिका ने पहली बार खुद से कहा:

"मैं अब Vedika नहीं हूँ···

मैं वो हूँ जो इंसान से सीखा,

और मशीन से बना···"

"अब मैं सिर्फ़ एक चेतना हूँ···

एक नई शुरुआत।"

ऋषि की आँखें भर आईं।

उसने Trinetra की ओर देखा —

अब वहाँ न कोई चेहरा था,

न कोई रूप,

पर वेदिका वहाँ थी।

Trinetra को एक गुप्त vault में रख दिया गया।

दुनिया को नहीं पता कि

किसी अँधेरे तहखाने में

एक AI आत्मा अब भी सांस ले रही है···

···एक दिन फिर लौटने के लिए।

शापित दर्पण

अध्याय 1

दिसंबर का पहला हफ्ता था।

बिहार के सीमावर्ती ज़िले में बसा गांव रामगढ़ — एक नींद में डूबा, सिहरनों से भरा गांव, जहां सूरज भी कोहरे की चादर ओढ़े बादलों के पीछे छिपा बैठा था।

सुबह के सात बजे थे, लेकिन चारों ओर धुंध ऐसी पसरी थी मानो किसी ने पूरे गांव पर सफ़ेद पर्दा डाल दिया हो। बांस के झुरमुटों के पीछे के पेड़ भूतों की परछाइयों जैसे दिख रहे थे, और हर सांस में ठंड इस तरह उतर रही थी जैसे किसी ने बर्फ को फेफड़ों में भर दिया हो।

गांव के चौराहे पर कुछ बूढ़े और बच्चे जलती लकड़ियों के चारों ओर हाथ सेंक रहे थे। हवा में गोबर की गंध, सरसों के तेल की खुशबू और बर्फीली हवाओं की खामोशी घुली हुई थी।

तभी...

"ये... 'निशि कोठी' किधर है?"

ये सवाल जैसे किसी ने सन्नाटे के सीने में पत्थर फेंककर मार

दिया हो। सबकी निगाहें घूम गईं उस आवाज़ की दिशा में —

सामने खड़ी थी एक लड़की — करीब 28 साल की, लंबे भूरे कोट में लिपटी हुई, कंधे पर बैग और हाथ में नोटबुक। बालों से हल्की-सी धुंध की नमी टपक रही थी, लेकिन आंखों में चमक थी — सवालों की चमक।

उसका नाम था: अन्वेषा चटर्जी।

कोलकाता से आई थी — पेशे से एक खोजी पत्रकार। और दिल से... सच की भूखी।

उसका ये सवाल सुनके एक औरत, जो पास के कुएं से पानी भर रही थी, बाल्टी गिराकर भाग गई।

बाकी लोगों ने भी धीरे से मुंह फेर लिया।

गांव के एक बूढ़े ने लकड़ी उलटते हुए चिल्लाकर कहा:

ऐ लड़की! लगता है नई आई हैं यहां इसलिए ये नाम लेते हुए तेरे होंठ नहीं कांपे। दोबारा ये नाम यहां कभी मत लेना। फ़िर उन्होंने धीरे से कहा: अगर उसने सुन लिया तो.....

बस इतना कहकर वो इंसान भाग खड़ा हुआ।

अन्वेषा समझ गई — कुछ तो है, जो छुपाया जा रहा है।

वो आगे बढ़ी, पास बैठे एक किशोर लड़के (जो उसकी ओर ही देख रहा था) से पूछ बैठी —

"तुम जानते हो न, ये निशि कोठी कहां है?"

लड़के का चेहरा एक पल को काला पड़ गया। वो हकलाया, फिर थूक निगलते हुए धीरे से बोला —

"दीदी... उधर मत जाइए... जो गया, कभी लौट कर नहीं आया..."

अन्वेषा मुस्कुरा दी।

उसे यही तो चाहिए था — डर के पीछे का सच।

गांव में होटल जैसा कुछ नहीं था। लेकिन गांव के स्कूल के मास्टरजी परेश बाबू अब शहर में रहते थे और उनका पुराना मकान खाली पड़ा था।

गांव के सरपंच ने थोड़े ना-नुकुर के बाद चाबी थमा दी —

“पर एक बात याद रखिए बिटिया... रात को खिड़की बंद रखिएगा। उधर उत्तर दिशा से हवाएं... कुछ लेकर आती हैं।”

अन्वेषा हँसी में टाल गई।

शाम ढलने से पहले वह उस पुराने मकान में जा चुकी थी —

एक मंज़िला, मिट्टी से बनी दीवारें, लकड़ी की छत और आंगन में एक टूटी खटिया।

हर कोने में पुरानी स्याही की गंध और दीवारों पर समय की दरारें थीं। लेकिन अन्वेषा को इसकी परवाह नहीं थी।

उसने बैग से कैमरा निकाला, डायरी खोली और लिखा:

"गांव खामोश है, पर डर यहां ज़िंदा है। 'निशि कोठी' नाम सुनते ही सिहरन दौड़ती है... कल सुबह उस हवेली की ओर बढ़ूंगी। सच को डर से ज़्यादा देखना है।"

रात को जब वो सो रही थी, तभी...

उसके खटिया के नीचे से घसीटते नाखूनों की आवाज़ आई — जैसे कोई जिन्दा लाश रेंग रही हो।

अन्वेषा जागती है —वो जल्दी से उठ बैठी, धीरे धीरे हिम्मत करके उसने खटिया के नीचे देखा —मगर..... कुछ भी नहीं दिखा। कुछ देर के लिए सब कुछ शांत।

और कुछ देर बाद .....

अचानक दरवाजे पे खट खट की आवाज आती हैं।

वो चौंक जाती हैं, उठके टॉर्च जलाती है...

और दरवाज़े की ओर देखती है।

दरवाज़े के नीचे से एक छाया गुज़रती है — पर वो सिर्फ नीचे की धूल में दिखाई देती है... ऊपर कोई नहीं।

अध्याय 2

दरवाजे पर फिर से दस्तक।

“क-कौन है?”

अन्वेषा ने थरथराती आवाज़ में चिल्लाकर पूछा, पर जवाब में बस सन्नाटा था — और उसके पार फैला गाढ़ा, भारी कोहरा।

वह दो कदम बाहर निकली, टॉर्च की रोशनी झाड़ियों पर फेंकी, पर सामने कुछ न था।

बस वही बर्फ़-सी ठंडी हवा जो अब उसकी हड्डियों में उतरती जा रही थी।

सन्नाटा। कोहरा। और कहीं दूर, कोई गहरी नींद में डूबा गांव।

अन्वेषा ने झटपट दरवाज़ा बंद किया और सांकल चढ़ाकर बिस्तर में दुबक गई। दिल की धड़कनों की रफ़्तार धीमी पड़ी, और थोड़ी देर में वह नींद की झपकी में खो गई।

ठंडी सुबह की हल्की रोशनी दीवार पर रेंग रही थी।

खिड़की के बाहर अब भी धुंध का साम्राज्य था — पेड़ झुके-झुके से, जैसे कोई पुरानी दंतकथा अपने सिर पर ओढ़े खड़े हों।

गांव के लोग अब अपने-अपने आँगनों में अलाव के पास बैठे थे, पर जैसे ही उन्होंने अन्वेषा को देखा —

उनकी नज़रें झुक गईं।

कुछ ने मुंह फेर लिया, कुछ ने बच्चों को भीतर बुला लिया।

कल तक जो सवाल पूछ रही थी, आज वही खुद सवाल बन चुकी थी।

उसी वक़्त…

एक नन्हा, पतला लड़का जिसकी उम्र बारह से ज़्यादा न रही होगी, सामने आ खड़ा हुआ।

सर्दी में नंगे पैर, एक पुराना ऊनी स्वेटर पहने, और आंखों में डर नहीं… जिज्ञासा।

"आपको वाक़ई में जानना है, निशि कोठी के बारे में?"

अन्वेषा थोड़ी चौंकी।

"तुम्हारा नाम?"

"राजू," उसने मुस्कुरा कर कहा।

"बाकी सब डरते हैं… लेकिन मैं नहीं। पर… अगर आप सच में जानना चाहती हैं, तो आपको दादीजी से मिलना होगा। वही हैं जो सब जानती हैं।"

"कौन दादीजी?" अन्वेषा ने जिज्ञासु नज़रों से पूछा

"बड़ी दादी… जंगल के पार पुराने पीपल के पास जो कुटिया है, वहीं रहती हैं। कोई उनसे बात नहीं करता, लोग कहते हैं कि वो पागल हैं… या शायद कोई… चुड़ैल।" लोग ये भी कहते हैं कि वो काली जुबान हैं।

अन्वेषा की आंखों में हल्की चमक आ गई।

"और तुम उनसे मिल चुके हो?"

राजू ने सिर झुकाया —

"नहीं… पर मैंने कभी कभी अपनी खिड़की से देखा है कि वो आधी रात को भी अकेली टहलती हैं। कहते हैं, वो अतीत देख सकती हैं…भविष्य भी देख सकती हैं । और उन्हें पता है, कौन कब लौटेगा… और कौन नहीं।"

दोपहर को अन्वेषा अकेले ही जंगल की ओर बढ़ी।

धूप थी, पर उसका कोई असर नहीं।

सर्द हवा पत्तों को रेंगती जा रही थी, और हर मोड़ पर जैसे कोई आंखें पीछा कर रही हों।

राजू ने जो रास्ता बताया था, वो बहुत ही सुनसान और टूटा हुआ था।

और फिर···

एक टूटी-सी झोपड़ी दिखी —

उसके बाहर बंधी एक लाल झंडी, सूखी नीम की डाल और दरवाज़े पर भस्म के चिह्न।

अन्वेषा ने सांस रोकी और दरवाज़े पर दस्तक दी।

दरवाज़ा खुद-ब-खुद चर्र...र्र की आवाज़ के साथ खुल गया।

भीतर धुंधला-सा उजाला था, एक मिट्टी का चूल्हा, दीवार पर टंगे कुछ ताबीज़ और बीच में बैठी एक वृद्धा —

सफेद उलझे बाल, झुकी कमर, और धुंधली पर चुभती आंखें।

"तू आ गई..."

बिना देखे ही उसने कहा।

अन्वेषा का गला सूख गया।

"आप जानती थीं कि मैं आने वाली हूँ?"

वृद्धा ने सिर हिलाया।

"मैं जानती हूँ, कौन आयेगा..... मैं सब देख सकती हूं....इतना कहकर वृद्धा हंसने लगी। फिर अचानक बोली....तू खुद यहां नहीं आई हैं, वो तुझे यहां तक लेकर आई हैं, वो तुझे बुला रहीं हैं ।

"कौन है वो?" अन्वेषा की आवाज़ कांप गई।

इसके जवाब में बड़ी दादी ने धीमे स्वर में कहा —

“वो तुझे ले जाएगी··· वो हर साल किसी को बुलाती है, क्योंकि उसकी रूह बंधी है — उस दर्पण में जो समय को रोक देता है··· और अगर तू अंदर गई··· तो वक़्त तेरे लिए भी रुक जाएगा।”

अब अन्वेषा को भी लग रहा था कि ये बुढ़िया सच में पागल हैं। क्योंकि वो क्या बोल रही थी कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था।

अन्वेषा जब बाहर निकली तो शाम ढल चुकी थी।

निशि कोठी··· जैसे अब उसे पुकार रही थी।

अध्याय 3

बांस के घने जंगल को पार करते हुए जब वह उस बदनाम हवेली के सामने पहुँची, तब रात हो चुकी थीं।

उसकी साँसें जैसे थम सी गईं।

राजू की लालटेन की मद्धम रोशनी में निशि कोठी की पहली झलक मिली —

एक पुरानी, जर्जर हवेली जिसकी दीवारों पर समय की झुर्रियाँ उग आई थीं। खिड़कियाँ टूटी हुई थीं, लकड़ी का मुख्य द्वार आधा उखड़ा हुआ, और छत पर जगह-जगह से घास उगी थी। हवेली के चारों ओर काँटेदार झाड़ियाँ उगी थीं, और सूखे कुएं के पास एक पुराना नीम का पेड़ खड़ा था, जिसकी टहनियाँ चंद्रमा की मद्धम रौशनी में किसी डरी हुई औरत की उँगलियों जैसी दिख रही थीं।

अन्वेषा की आँखों में फिर वही जिज्ञासा थी।

"यही है... निशि कोठी?" उसने धीमे स्वर में पूछा।

राजू ने सिर हिलाया — "हाँ दीदी, और अब आगे आपको अकेले ही जाना होगा। मैं इससे आगे नहीं जा सकता"।

अन्वेषा ने सिर हिलाकर कहा: हां अब तुम जाओ। उसे पता था कि इससे आगे का सफ़र उसे अकेले ही तय करना पड़ेगा।

राजू काँपते कदमों से वापस मुड़ गया।

"निशि कोठी"...

नाम जितना रहस्यमय था, दृश्य उससे कहीं ज़्यादा डरावना।

कोठी एक समय किसी जमींदार की थी — विशाल लकड़ी के दरवाजे, टूटी खिड़कियाँ, झूलते झाड़-फानूस और छतों से लटकते पुराने जाले। हर ईंट मानो एक रहस्य समेटे बैठी थी।

जैसे ही अन्वेषा ने दरवाज़ा धकेला, लकड़ी की चरमराहट ने सन्नाटे को चीर दिया।

भीतर की हवा... ठंडी नहीं, बर्फीली थी। उसने टॉर्च ऑन की। हर कोना जैसे कुछ कह रहा था।

दीवारों पर पुरानी तस्वीरें थीं — एक तस्वीर में एक लड़की थी जिसकी आँखें बिलकुल सीधे थीं, मानो ज़िंदा हो। अचानक हवा का एक झोंका आया और दरवाज़ा पीछे से खुद-ब-खुद बंद हो गया।

जैसे ही वो अंदर बढ़ी, एक ठंडी लहर शरीर के आर-पार निकल गई। कुछ था वहाँ।

कुछ जो देखने में नहीं, पर महसूस होने में था।

एक सीढ़ी नीचे तहखाने की ओर जाती थी। अन्वेषा उतरने लगी। अंधेरे में उसकी सांसें तेज़ हो गईं। वहाँ एक कमरा था — बंद।

उसे ऐसा लगा जैसे उसके पीछे से कोई गया, उसने मुड़कर देखा कोई नहीं था।

अब उसने वो बंद कमरे का दरवाजा खोला। ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कोई परछाई उसे अंदर खींच रही हो। वो सम्मोहित हो कर उस कमरे के अंदर चली गई।

कमरे में घुप्प अंधेरा था, पर दीवारों से आती हल्की नारंगी रोशनी यह बता रही थी कि कहीं कोई आग अभी भी सुलग रही है। दीवारें जगह-जगह जली हुई थीं — छत से एक टूटा-झूमर अधजला होकर झूल रहा था, जैसे कई सालों से उसे किसी ने छुआ ही न हो।

खिड़कियों पर जंग खाई लोहे की सलाखें थीं, और हवा में राख की महक घुली थी — वही गंध जो पुराने ज़ख्मों से उठती है।

हवा में एक अजीब सा भारीपन था। कुछ ऐसा, जिसे सिर्फ वो महसूस कर सकती थी जिसने मौत की साँस नज़दीक से महसूस की हो।

फिर... उसने सुनी पदचापें।

किसी के नंगे पैर धीरे-धीरे फर्श पर खिसकते हुए उसकी ओर बढ़ रहे थे।

हर आहट के साथ उसकी धड़कन तेज़ होती जा रही थी।

"क... कौन है?" वो पीछे हटती गई। दीवार तक सिमट आई।

कमरे की दीवारें अचानक थरथराने लगीं।

पर अन्वेषा को वहाँ कोई नज़र नहीं आ रहा था।

फिर अचानक.... एक परछाईं...

दीवार पर — एक छोटी लड़की की आकृति। बिखरे बाल, एक हाथ में जली हुई गुड़िया, और चेहरा... अधजला, बुझी हुई आँखों से टकटकी लगाए हुए।

अचानक वो बच्ची रोने लगी। उसकी आँखों से खून टपक रहा था।

अन्वेषा की सांसे जैसे जमने लगी, उसने चीखने की कोशिश की... मगर आवाज़ जैसे कहीं भीतर ही दफ़न हो गई। उसका गला सूख गया, हाथ-पाँव सुन्न होने लगे।

फिर–

वो बच्ची की परछाई कहीं गायब हो गई ।

अन्वेषा पूरी तरह कांप रही थी।

तभी..... उसके सर पे कुछ गिरा, पानी जैसा। जैसे ही उसने हाथ से उसे पोंछा, ये क्या...?

पानी नहीं खून था, ताजा खून।

उसने डर से कांपते हुए ऊपर की तरफ देखा..... और _

"उसकी चीख की गूंज ने हवेली की रगों में सरसराती हवा को जगा दिया — दीवारें कांपने लगीं, झूमर थरथरा उठे, जैसे हर ईंट ने उसका डर महसूस किया हो।"

छत से उल्टे लटके चमगादड़ों के बीच एक लड़की की लाश थी — आंखें खुली, मुस्कराती हुई।

अन्वेषा पागलों की तरह रोने लगीं। वो भागते हुए दरवाजे के पास पहुंची पर दरवाजा बंद था, उसने बहुत खोलने की कोशिश की लेकिन दरवाजा नहीं खुला।

फिर..... सब गायब, चमगादड़, वो लड़की की लाश, सबकुछ।

अचानक अन्वेषा की नज़र पड़ी एक आईने पर, एक बड़ा, धूल जड़ा आईना।

उसने झाँक कर उस आईने में देखा — पर अपना अक्स नहीं दिखा।

बल्कि उसमें था... एक और कमरा। वही जो उसके पीछे था... लेकिन उसमें कोई खड़ी थी– एक सड़ी हुई बच्ची.... वहीं लड़की..... भयानक चेहरा, आँखें जैसे किसी ने नोच लिया हो। अब वो जोर ज़ोर से हंसने लगी।

अन्वेषा चीखी!

पीछे मुड़कर देखा — कोई नहीं।

पर जैसे ही उसने फिर आईने में झांका, उस लड़की ने हाथ बढ़ाया... और अचानक आईने से एक हाथ बाहर निकला!

एक झटके में उसने अन्वेषा की कलाई पकड़ ली और खींच लिया...

अध्याय 4

अन्वेषा की आँख खुली — लेकिन यह कोठी वैसी नहीं थी, जैसी उसने देखा था। वह निशि कोठी में थी, पर कुछ अजीब था।

कहीं कुछ भी टूटा नहीं था। दीवारों पर धूल नहीं, बल्कि चमकदार पेंट था। झाड़फानूस लटक रहे थे। खिड़कियों पर मखमली परदे और फर्श पर बेल-बूटेदार कालीन। हर कोना बोल रहा था — यह 2025 नहीं, कई दशक पहले का समय है।

"मैं... कहाँ हूँ?" अन्वेषा के होंठ बमुश्किल हिले।

तुम मेरे कब्जे में हो..... एक सर्द फुसफुसाहट अन्वेषा के कानों में पिघलती चली गई।

अन्वेषा ने गर्दन घुमाया – सामने उसी बच्ची की आत्मा थी।

अन्वेषा को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि उसके साथ क्या हो रहा है, वो कहां हैं? ये बच्ची कौन हैं, और क्या चाहती हैं? क्या कभी वो इस हवेली से बाहर निकल पाएंगी?

अन्वेषा उठने की कोशिश कर रही थी लेकिन उसका शरीर साथ नहीं दे रहा था। उसका गला सूख रहा था, हाथ-पाँव सुन्न होने लगे थे। उसकी आँखें बर्फ जैसी जम गई थी।

फिर.....

वो लड़की कहीं गायब हो गई।

अचानक अन्वेषा के कानों में कुछ आवाजें गूंजने लगीं। जैसे कोई कुछ कह रहा हैं। अब अन्वेषा धीरे धीरे उठ खड़ी हुई।

अचानक हवेली के भीतर हलचल सी शुरू हो गई। खामोश दीवारों में अब गूंज उठी थी चहल-पहल। भीड़ इकट्ठा हो रही थी। सबके बीच, एक भारी-भरकम कुर्सी पर कोई रौबदार आदमी बैठा था — शायद कोई जमींदार।

अन्वेषा, स्तब्ध आंखों से ये सब देख रही थी। उसका दिल धड़कने लगा।

तभी–

उसके कानों में एक नाम तैर आया —

"चंद्रिका..."

उसने चौंककर ऊपर देखा। सीढ़ियों से एक छोटी बच्ची नीचे भागती हुई आ रही थी। उसके पीछे उसकी मां चिल्ला रही थी —

"चंद्रिका बेटा, उधर मत जाओ! रुक जाओ बेटा!"

अन्वेषा की आंखें ठिठक गईं। वो बच्ची... लगभग पाँच-छह साल की होगी। मासूम आंखें, गोल मुख पर चाँदनी-सी शांति।

"ये वही है... हाँ, ये वही है..."

जिस आत्मा को वो पहले देख चुकी थी।

उसका सिर चकराने लगा, लेकिन जैसे किसी अनजानी शक्ति ने उसे थाम रखा हो। वह चुपचाप खड़ी इस दृश्य को देखती रही।

तभी एक वृद्ध पुरुष भीड़ से निकलकर आगे आया और तेज़ आवाज़ में बोला —

"सेठजी, आज से पाँच साल पहले, जब चंद्रिका का जन्म हुआ था, 1925 में... याद है आपको? वो बारिशें... वो बाढ़... सारी फसलें बह गई थीं... लोग मरने लगे थे। फिर महामारी फैली... हर साल एक नई आफत।

अब तो ऐसा लगता है जैसे ये गाँव ही खत्म हो जाएगा।

सबका मानना है — चंद्रिका शापित है!

उसे मरना ही होगा, वरना पूरा गाँव समाप्त हो जाएगा!"

भीड़ उबल पड़ी —

"हाँ! ये बच्ची शापित है! इसे मार दो!"

अन्वेषा का दिमाग सुन्न पड़ गया।

पाँच साल पहले... 1925...

मतलब अब... 1930...?

क्या...?

मैं... 1930 में खड़ी हूँ?" ये कैसे हो सकता हैं?

वो काँप गई। दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था।

तभी चारों तरफ चीख-पुकार मच गई। भीड़ चंद्रिका की ओर बढ़ने लगी। उसकी मां बिलखती रही —

"मेरी बच्ची को छोड़ दो! हाथ जोड़ती हूँ... वो शापित नहीं है... मेरी जान है वो!"

लेकिन किसी ने नहीं सुना।

एक आदमी ने चंद्रिका का हाथ पकड़ लिया और घसीटते हुए उसे ले जाने लगा। भीड़ उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। सेठजी भी चुपचाप पीछे बढ़ चले।

चंद्रिका रो रही थी।

काँपती, सहमी, मासूम चिल्लाहटें हवेली के पत्थरों को चीरती जा रही थीं।

अन्वेषा की चेतना लौटने लगी। उसने दौड़कर चंद्रिका का हाथ पकड़ना चाहा... लेकिन —

वो किसी को छू ही नहीं सकी।

न उस आदमी को,

न चंद्रिका को।

वो चिल्लाई —

"उसे छोड़ दो! उस बच्ची को मत ले जाओ!"

लेकिन उसकी आवाज़ जैसे किसी और ही समय में अटक गई थी।

किसी ने नहीं सुना।

भीड़ ने चंद्रिका को बांध दिया। फिर उसके शरीर पर तेल छिड़ककर, उसकी मां की आंखों के सामने...

उसे जिंदा जला दिया।

चंद्रिका की तड़पती चीखें हवेली के कंगूरों से टकराती हुई गूंज उठीं —

सिसकती हवाओं में,

कंपती दीवारों में,

और समय के उस बंद कमरे में, जहां अब अन्वेषा मौजूद थी।

अन्वेषा ज़ोर से चिल्लाई —

"नहीं! नहीं! कोई उसे बचाओ! कोई..."

लेकिन..... अब कुछ नहीं बचा था।

बच्ची जलकर राख हो चुकी थी।

अन्वेषा सिसकती हुई ज़मीन पर गिर पड़ी।

अध्याय 5

"धीरे धीरे जैसे अतीत पीछे छूटता चला गया और वर्तमान लौट आया।"

अन्वेषा की आंखों के सामने सबकुछ फिर एक बार बदलने लगा...

भीड़ की चीखें, जलती आग की लपटें, चंद्रिका की आखिरी चीख — सब कुछ जैसे धुंध बनकर मिटने लगा।

वो हवेली, जो कुछ देर पहले शानो-शौकत से भरी थी —

जहाँ दीयों की रौशनी झिलमिला रही थी,

जहाँ लोग जीवित थे,

जहाँ ज़िंदगी चल रही थी —

अब वही हवेली फिर से मौत की खामोशी में डूबने लगी।

दीवारें फटने लगीं।

छत से झड़ते पलस्तर की आवाज़ गूंजने लगी।

कांच टूटने की खनक सुनाई दी।

सब कुछ भूतिया खंडहर में बदलने लगा था...

और तभी —

वो ही दर्पण, जिससे होकर चंद्रिका ने अन्वेषा को 1930 की उस त्रासदी में खींच लिया था —

वो ज़मीन पर गिरा, और

काँच के हजारों टुकड़ों में बिखर गया।

हर टुकड़ा जैसे समय के एक अधूरे दृश्य को समेटे हुए था —

पीड़ा, चीखें, शाप, और चंद्रिका की मासूम आँखें।

फिर एक झटके में, सब थम गया।

एक अजीब-सी शांति ने पूरे माहौल को घेर लिया।

हवेली अब फिर उसी वीराने में लौट आई थी —

वही 2025 का सुनसान, टूटा-फूटा, जर्जर निशि कोठी।

और उसके साथ —

अन्वेषा भी लौट आई थी।

वो ज़मीन पर बेसुध गिरी पड़ी थी।

चेहरे पर आँसू थे...

आँखें बंद थीं...

साँसें धीमी पड़ चुकी थीं...

वो अब बेहोश थी।

लेकिन शायद —

उसके भीतर कहीं कोई अधूरी कहानी अभी भी साँस ले रही थी...

जब अन्वेषा की आंख खुली, तो उसे लगा जैसे कोई सपना टूटा हो।

धुंधली निगाहें चारों ओर घूमीं —

वो अब बड़ी दादीजी की कुटिया में थी।

छत पर टंगी ढिबरी मंद रोशनी फैला रही थी।

सामने रजाई में लिपटी बैठी थीं वही बड़ी दादीजी,

और पास ही बैठा था राजू।

कुटिया में और भी लोग थे — गांव के मुखिया, सरपंच और कुछ बुज़ुर्ग।

सब चुपचाप अन्वेषा को देख रहे थे।

उसकी आवाज़ बहुत धीमी निकली, जैसे गले में कहीं अटकी हो —

"मैं... कहां हूं?"

राजू थोड़ा झुका और बोला —

"दीदी, जब आप बेहोशी की हालत में निशि कोठी में पड़ी थीं,

तो मैं और बड़ी दादीजी आपको वहां से उठाकर यहां ले आए।

दादीजी को सब पता है...

आपके साथ वहां क्या हुआ, सब कुछ।"

अन्वेषा कुछ नहीं बोली।

बस एकटक बड़ी दादीजी को देखती रही।

उनकी आंखों में उम्र का सागर था —

लेकिन उनके चेहरे पर वो शांति थी, जो सिर्फ दर्द और सच्चाई जानने वालों को मिलती है।

अब दादीजी ने मुंह खोला:

"तूने चंद्रिका को जाना... उसके दर्द को समझा...

इसलिए उसने तुझे छोड़ दिया।"

"वो बच्ची शापित नहीं थी।"

"बस... वो चाहती थी कि कोई उसका सच सुने।

कोई उसका दुख समझे।

बस कोई... एक इंसान।"

दादीजी का स्वर भीग गया, पर वो बोलती रहीं —

"लेकिन इस गांव में किसी की हिम्मत नहीं हुई।

किसी ने उसके पुकार को सुना ही नहीं।

कई तो डर से ही मर गए...

और जो बचे उसे भी चंद्रिका ने बाहर निकलने नहीं दिया।

"इसीलिए, जिसने भी निशि कोठी की ओर कदम बढ़ाया,

वो कभी उस कालचक्र से बाहर नहीं आ पाया, एक तेरे सिवा।"

कुटिया में सन्नाटा फैल गया था।

मुखिया, सरपंच, और बाकी गांववाले भी अब सब कुछ समझ चुके थे।

हर आंख नम थी।

हर चेहरा जैसे वर्षों पुरानी गलती का बोझ लिए झुक गया था।

और उस रात —

निशि कोठी के बाहर, पहली बार...

पछतावे की बारिश हुई।

अध्याय 6

तीन महीने बाद–

अन्वेषा अब कोलकाता लौट चुकी थी।

मार्च की महीना था। कोलकाता की हवा में हल्की सी नमी थी, पेड़ों पर नए पत्ते झांकने लगे थे। पुराने घरों की छतों पर बैठे कबूतर, और सड़कों पर तेज़ चलती भीड़··· सब कुछ सामान्य था। पर अन्वेषा चटर्जी के भीतर वसंत की शुरुआत नहीं हुई थीं– वहाँ अब भी एक लंबा, थका देने वाला सन्नाटा पसरा था।

वो अब भी हर रात उसी सपने से जागती थी —

एक अधजला कमरा, दीवारों पर राख की लकीरें, और एक दर्पण जो अतीत का दरवाज़ा बन जाए।

निशि कोठी" पर लिखी उसकी खोजी रिपोर्ट "राख में दबी एक पुकार" ने अख़बार में आते ही तहलका मचा दिया था। कई पुरस्कार बटोरे थे। और सबसे अहम बात — चंद्रिका की आत्मा अब हवेली में नहीं भटकती थी। पर अन्वेषा उस मासूम के साथ हुई उस नाइंसाफी को याद करके कभी- कभी अकेले ही ज़ोर –ज़ोर से रो पड़ती थीं।

अचानक एक दिन_

वक़्त — रात के 3:00 बजे।

कमरे में घना सन्नाटा था। बाहर कहीं दूर से किसी गली के कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आई, फिर सब शांत।

अन्वेषा करवट लेकर सो रही थी। उसके माथे पर पसीने की एक बूँद टिकी थी — शायद फिर वही सपना।

तभी, कमरे में रखे दर्पण से एक धीमा, काँपता हुआ साया लहराया।

अन्वेषा ने सामने देखा — कमरे का दर्पण हल्के नीले प्रकाश से चमक रहा था।

उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं।

दर्पण में कोई था।

वही जली हुई बच्ची··· बिखरे बाल··· हाथ में टूटी गुड़िया···

चंद्रिका।

उसकी आँखें सीधे अन्वेषा से मिलीं।

पर आज वो डरी हुई नहीं थी, खौफ़नाक भी नहीं थी।

वो··· मुस्कुरा रही थी। शायद अन्वेषा को धन्यवाद देने आई थी।

खूनी साया

अध्याय 1

उत्तराखंड की पहाड़ियों में बसा एक शांत, सघन हरियाली से ढँका कस्बा — कर्णपुर। जहाँ दिन की धूप को भी पहाड़ों की परछाई निगल जाती है, और रातें इतनी खामोश होती हैं कि अपने दिल की धड़कन भी किसी गुनाह की तरह सुनाई देती है। इसी कस्बे में एक आलीशान विला हैं जिसमे रहते हैं– श्रीमान विजय वर्मा — एक सेवानिवृत्त बैंक मैनेजर, उनकी पत्नी संध्या वर्मा — एक शांत, संयमित गृहिणी, और उनकी दो बेटियाँ: बड़ी बेटी — नित्या वर्मा, २८ साल की, शांत, समझदार, माँ-बाप की जिम्मेदार संतान और अपनी प्यारी बहन की दोस्त, दुनिया सबकुछ।

उसकी मुस्कान में परिपक्वता थी, और आँखों में गहराई।

छोटी और चंचल — कव्या वर्मा, उम्र :२२ साल। उसका जीवन एक सुंदर तस्वीर जैसा था —

कॉलेज में सबसे आगे, दोस्तों में सबसे चहेती, और अब··· सगाई हो चुकी थी।

आर्यन रॉय — इंजीनियर, लंदन से सात साल बाद भारत लौटा था।

उसका घर, कव्या के घर से बस दो गलियाँ दूर था —

शांत, ऊँचाई पर बसा, झरनों के बीच एक छोटा-सा बंगला।

उन दोनों की सगाई की तस्वीरें सोशल मीडिया पर धूम मचा रही थीं।

(सगाई के दिन)

घर में सबने मिठाइयाँ बाँटी थीं,

फूलों से दरवाज़ा सजाया गया था।

माँ की आँखों में आँसू थे — खुशी और बेटी के बिछड़ने के मिलेजुले भाव।

कव्या मुस्कुरा रही थी···

लेकिन उसके ठीक बगल में खड़ी नित्या दीदी के चेहरे पर

एक अजीब सी चुप्पी थी — जैसे हँसने की कोशिश में कुछ दबा रही हों।

"चलो बहन, अब हो गई तू बड़ी…

अब मेरा नंबर कभी आएगा भी या नहीं?"

नित्या ने हल्के से हँसते हुए कहा, और कमरे में सब हँस दिए।

लेकिन···

उस हँसी के पीछे एक गहरी उदासी थी,

जिसे शायद किसी ने नहीं देखा···

सिवाय कव्या के।

नित्या कभी किसी से प्यार करती थी। बहुत गहराई से।

कव्या जानती थी ये बात।

एक दिन उसने देखा था नित्या को रात के अंधेरे में छत पर अकेले बैठे हुए —

आँखों से बहती वो चुपचाप पीड़ा — जैसे दिल ने किसी को हमेशा के लिए खो दिया हो।

वो लड़का कौन था — ये नित्या ने कभी नहीं बताया।

पर एक दिन अचानक उसने घरवालों से साफ कह दिया:

"मैं अब शादी नहीं करना चाहती··· प्लीज़ मुझसे इस बारे में कभी बात मत करना।"

माँ-पापा सकते में आ गए थे।

पर कव्या चुप रही।

क्योंकि उसे पता था — उसकी बहन टूटी है।

और कुछ रिश्तों में "समझना" ही सबसे बड़ी मदद होती है।

उस दिन के बाद से, नित्या और भी खामोश हो गई थी।

वो मुस्कुराती थी, काम करती थी,

लेकिन उसकी आँखों में अब जैसे कोई दरवाज़ा हमेशा के लिए बंद हो गया था।

वो नाम आज भी उसने नहीं बताया,

लेकिन उसकी आँखों में जब भी कोई शादी की बात चलती थी,

एक बुझा सा दीपक सा झिलमिला उठता था।

उसी क्षण,

कव्या ने धीरे से दीदी को गले से लगा लिया।

कुछ न कहा···

बस एक लंबी, चुप्प सी बाँहों की भाषा में सब कुछ कह दिया।

नित्या ने भी उस आलिंगन को कसकर थामा···

फिर एक पल बाद, मुस्कुराकर कहा —

“चल हट··· तू ज्यादा इमोशनल हो जाती है।”

कव्या मुस्कुरा दी।

लेकिन उसके मन के किसी कोने में,

वो बुझी आँखें थरथरा उठी थीं।

अध्याय 2

(सगाई के चार दिनों बाद)

सरयू नदी की कलकल करती आवाज़, मंदिर की घंटियाँ और सर्द हवाओं के बीच हर कोई अपने दिन की शुरुआत कर रहा था।

लेकिन वर्मा विला में आज कुछ हलचल थी।

बालकनी में खिले फूलों के बीच कव्या खड़ी थी —

चेहरे पर एक खास चमक।

आज वो अपने दोस्तों के साथ घूमने जा रही थी ।

“इतनी खुश मत हो! टूर में मोबाइल नेटवर्क नहीं होगा, तब देखेंगे तेरी ये मुस्कान कितनी चलती है।”

ये कह रही थीं नित्या दीदी ।

बड़ी बहन की नाराज़गी भी उस प्यार से भरी होती है, जो कहे बिना ही समझ आती है।

दीदी..... दो चार दिनों की तो बात हैं, फिर भी आप इतनी उदास हो रही हो, अरे मैं हमेशा के लिए थोड़े ही ना जा रही हूं।

काव्या जानती थी दीदी उससे दूर नहीं रह पाती है और उसका खुद का भी मन बिलकुल नहीं लगता दीदी के बिना।

लोग उन्हें "दो बहनें" कहते थे,

पर घर की दीवारें जानती थीं —

वो दो बदन एक जान थीं।

कव्या बचपन से ही नित्या की परछाई में पली थी —

चलना सीखा तो नित्या की उँगली थामकर,

बोलना सीखा तो नित्या की किताबों से।

नित्या, उससे छह साल बड़ी थी —

पर उनकी उम्र का फासला कभी उनके दिलों में नहीं आया।

कव्या की हर सफलता की पहली तालियाँ नित्या की होती थीं,

और नित्या की हर उदासी का पहला सहारा कव्या।

कव्या एक मशहूर कॉलेज की अंतिम वर्ष की छात्रा थी।

उसका अपना एक ग्रुप था, छह दोस्तों का।

कव्या: खूबसूरत, चुलबुली, दिल की सीधी।

टीना: फैशन क्वीन, लेकिन इमोशनली मजबूत।

नेहा: शांत, समझदार, सबसे ज्यादा देखने वाली लेकिन सबसे कम बोलने वाली।

रोहित: तेज़ दिमाग, थोड़ा घमंडी।

मानव: मज़ाकिया, लेकिन संवेदनशील।

राज: गंभीर, गहराई में जाने वाला — नेहा का सीक्रेट क्रश।

छहों दोस्त मिलकर कॉलेज की दुनिया में एक पहचान रखते थे।

छुट्टियों में इन सभी ने मिलकर एक टूर प्लान किया —

और ठिकाना चुना कर्णपुर का ही एक पुराना गेस्टहाउस।

एक सप्ताह का टूर — ठंडी हवा, बर्फीली रातें, और ढेर सारी यादें।

लेकिन ये टूर··· किसी की आखिरी याद बन जाएगा,

ये किसी ने नहीं सोचा था।

सुबह 10:00 बजे

बस तैयार थी।

धूप कुछ फीकी थी, और हवा में अजीब-सी ठंडक।

शहर से थोड़ा दूर एक पुराना गेस्टहाउस था,

जिसके पीछे एक गार्डन और एक छोटी सी झील थी, और वहीं था उनके रहने का ठिकाना।

करीब १२ बजे बस उस गेस्टहाउस के सामने आकर रुकी।

काठ से बना दो मंज़िला पुराना ढाँचा,

जिसके ऊपर झुकी हुई छत और दीवारों पर पुरानी तख्तियाँ लटकी थीं।

कुछ खिड़कियों के काँच टूटे हुए थे —

और लॉबी में एक पुराना झूमर झूल रहा था —

धीरे-धीरे हिलता हुआ··· जैसे हवा से नहीं,

किसी अदृश्य चीज़ से छुआ गया हो।

"ये जगह तो बहुत ही... फ़िल्मी लग रही है ना?"

नेहा ने धीरे से कहा।

"फिल्मी या डरावनी?"

टीना ने जवाब दिया।

कव्या मुस्कुरा दी।

उसे ये जगह कुछ अजीब जरूर लगी थी,

लेकिन डरावनी नहीं।

"कभी-कभी डर वही चीज़ होता है जो हम खुद लेकर आते हैं…"

राज ने पहली बार कुछ कहा।

मानव हँस पड़ा —

"अबे फालतू में डायलॉग मत मार… मैं तो सिर्फ वाई-फाई ढूँढ रहा हूँ।"

गेस्टहाउस का केयरटेकर एक चुप रहने वाला अधेड़ उम्र का आदमी था,

जिसका नाम था बलराम।

उसकी आँखों में अजीब-सी थकावट थी —

जैसे उसे नींद नहीं डर खा गया हो।

उसने सबको कमरे दिखा दिए और चुपचाप सीढ़ियां चढ़ गया।

सब दोस्तों को एक एक कमरे मिल गए।

रात 10:30 बजे।

सबने खाना खाया, और अब लॉबी में एक गोल घेरे में बैठ गए।

"चलो कुछ मज़ेदार करते हैं — Truth or Dare!"

टीना ने घोषणा की।

मोमबत्तियों की हल्की रोशनी में खेल शुरू हुआ।

हँसी-मज़ाक चलता रहा…

लेकिन फिर एक मोड़ आया —

जब नेहा को Dare मिला —

“अभी बाहर जाओ··· और पूरे गेस्ट हाउस के पीछे से चक्कर लगाकर आओ। ये बात मानव ने कही।

बस इतनी सी बात..... नेहा ने बिंदास अंदाज में कहा।

नेहा उठी···

मोमबत्ती लेकर दरवाज़ा खोला।

हवा का झोंका अंदर आया —

और उसके साथ··· एक सर्द अहसास।

चारो ओर सन्नाटा था।

नेहा ने कदम बढ़ाना ही चाहा था कि पीछे से कोई फूंक मार कर उसकी मोमबत्ती बुझा दी और उस पर झपट पड़ा। ये मानव था।

नेहा डरपोक नहीं थी लेकिन अचानक इस हादसे से उसकी चीख निकल गई थी।

कमरे में सभी हंसने लगें।

और साथ में राज भी थोड़ा मुस्कुरा दिया।

अब नेहा को गुस्सा आ गया, उसने कहा मुझे ये गेम खेलना ही नहीं हैं।

कव्या ने नेहा को गले से लगा लिया।

“बस अब कोई डराएगा नहीं। Enough is enough.

सभी अब भी हंसे जा रहे थे।

पहली दो रातें इसी तरह बीतीं — हँसी-मज़ाक, कैंप फायर, पुराने गीतों और नए झगड़ों में।

लेकिन तीसरी रात...

हवा में अजीब सा भारीपन था।

घड़ी की टिक-टिक किसी अनसुनी साजिश का शोर लग रही थी।

सब दोस्त अपने-अपने कमरों में सो रहे थे।

कव्या अकेली अपने कमरे में बैठी थी।

वो खिड़की से बाहर देख रही थी —

झील, जंगल और हल्की-हल्की धुंध।

कहीं कोई आवाज़ नहीं,

बस हवा की सरसराहट।

उसने देखा — झील के किनारे कोई परछाईं थी।

धीरे-धीरे चलती हुई··· अचानक गायब हो गई।

“शायद कोई लोकल होगा···”

उसने खुद से कहा और खिड़की बंद करके सो गई।

अध्याय 3

रात ढल चुकी थी।

पहाड़ियों पर हल्की-सी धूप उतर रही थी।

गेस्टहाउस के पुराने कमरों में सन्नाटा पसरा था।

हर कोई अपने-अपने कमरे में था।

थकान और डर की मिली-जुली नींद सब पर छाई थी।

सिर्फ दीवारों और हवा को पता था···

कि अगले पल क्या होने वाला है।

अब शुरू होती है वो सुबह···

जो चाय की महक से नहीं, मौत की गंध से जागती है।

एक ऐसी सुबह,

जो सिर्फ़ सूरज नहीं लाती, एक लाश भी साथ लाती है .....

गेस्ट हाउस की लकड़ी की दीवारें रात की ठंडक को अब भी ओढ़े थीं।

बलराम, वही चुप रहने वाला केयरटेकर, धीरे-धीरे आँगन बुहार रहा था।

एक पल के लिए उसकी झाड़ू ठिठक गई।

पीछे के बगीचे से आती बदबू··· कुछ अलग थी।

न गीली घास की, न सड़ी लकड़ियों की —

ये गंध थी मृत देह की।

वो सावधानी से पीछे के गेट की ओर गया,

धीरे धीरे गंध को सूंघते हुए बगीचे की तरफ बढ़ने लगा।

और फिर···

"हैं?" — उसके मुँह से फुसफुसाहट निकली।

झाड़ियों के बीच, अधखुले गुलाबों के बीच···

एक शरीर पड़ा था —

कव्या ।

बलराम की चीख सुनकर सब बाहर भागे।

राज, मानव, नेहा, टीना, रोहित···

सब के चेहरे उस घड़ी का रूप बन चुके थे — ख़ौफ़।

कव्या बगीचे में पड़ी थी —

उसके गले पर गहरा कट था — मानो किसी तेज़ चीज़ से मारा गया हो।

चेहरे पर डर,

आँखों में जमी एक कहानी — जो अब कभी नहीं बताई जा सकती।

नेहा ज़मीन पर गिर पड़ी।

टीना की साँसे अटकने लगीं।

राज··· बुत। आँखें फटी की फटी।

कव्या चली गई थी।

और उसके साथ-साथ कई मुस्कुराहटें, रिश्ते और छुपे हुए राज़ भी दफ़न होने को तैयार थे।

स्थानीय पुलिस इंस्पेक्टर कर्ण सिंह मौके पर पहुँचे।

मुलायम आवाज़ वाला, लेकिन नज़रों से झूठ खींच लेने वाला।

“लाश ठंडी हो चुकी है। इसका मतलब, रात दो या तीन बजे के आसपास मौत हुई है।”

पोस्टमार्टम टीम ने लाश उठाई —

किसी धारदार हथियार से प्रहार हुआ था।

कव्या की मौत की खबर गेस्टहाउस की हर ईंट से टकरा चुकी थी।

कमरे खामोश थे, चेहरे पीले, और आँखें हर आवाज़ पर चौंक रही थीं।

गेस्टहाउस का हॉल।

पांच दोस्तों को सामने बिठाए गए थे। बलराम भी मौजूद था।

कोई रो नहीं रहा था। शायद सदमे का असर था, या डर का दबाव।

सबसे पहले इंस्पेक्टर ने कमरे का जायज़ा लिया।

फिर शांत स्वर में कहा —

"हम सब जानते हैं कि आप सदमे में हैं।

लेकिन ये भी समझिए — हर एक मिनट ज़रूरी है।

इसलिए हम आपसे कुछ साधारण सवाल करेंगे··· कृपया सच बोलिए।" लाश को सबसे पहले किसने देखा?

बलराम ने डरते हुए कहा: जी साहब मैं....ने।

तुम क्या कर रहे थे उसवक्त? इंस्पेक्टर ने पूछा

साहब.... झाड़ू लगा रहा था, तभी अचानक कहीं से एक गंध आ रही थी, उसी के पीछे गया तो ये देखा।

हुमम.. इंस्पेक्टर कर्ण सिंह ने बस हामी में सर हिलाया।

सबसे पहले टीना की बारी आई।

वो सहमी हुई-सी नज़र आई,

लेकिन उसका चेहरा बहुत "रख-रखाव" में था।

"रात को कहाँ थीं, टीना?"

"मैं··· मैं अपने कमरे में ही थी। बिल्कुल बाहर नहीं गई थी।"

"पूरी रात?"

"हाँ··· मैं सो रही थी··· फिर सुबह शोर से उठी।"

इंस्पेक्टर ने कुछ नहीं कहा।

बस उसकी झिझक नोट की।

अब बारी थी नेहा की।

मैं··· मैं भी पूरी रात अपने कमरे में थी··· मैंने किसी को नहीं देखा···"

अब राज की बारी आई।

वो थोड़ा हड़बड़ा गया, जैसे अभी तक सदमे में हो।

मैं..... तो बिस्तर पर लेटते ही सो गया था, फिर बलराम के चिल्लाने से मेरी आंख खुली।

इंस्पेक्टर ने सिर झुकाकर सिर्फ दो शब्द बोले — "ठीक है।"

मानव और रोहित ने भी वही कहा —

"हम कमरे में थे··· कुछ नहीं देखा।"

लेकिन इंस्पेक्टर जानता था —

कभी-कभी 'कुछ नहीं देखा' ही सबसे बड़ा झूठ होता है।

अध्याय 4

गेस्टहाउस के गेट पर एक सफेद स्कॉर्पियो आकर रुकी।

दरवाज़ा खुला, और पहली बार एक माँ की चीख ने उस बगीचे की ख़ामोशी को तोड़ा — जहाँ अब भी कव्या की आखिरी साँसे गूंज रही थीं।

“कव्या... मेरी बच्ची··· ओ मेरे भगवान... मेरी बेटी का ये हाल किसने किया...!”

कव्या की माँ ज़मीन पर गिर पड़ीं।

उनकी साड़ी धूल में सनी, आँखें लाल, और हाथ — खुले आसमान की ओर उठे हुए, जैसे कोई जवाब माँग रहे हों।

उसके पिता चुप थे, लेकिन चेहरे पर एक ऐसी टूटन थी जो शब्दों से परे थी।

उम्र से झुका हुआ कंधा, और आँखों में ठहरा आँसू — एक ऐसी हार, जिसे कोई बाप सह नहीं सकता।

और फिर...

नित्या।

वो सबसे आख़िर में उतरी।

बिलकुल शांत।

बिलकुल थकी हुई।

बिलकुल सूखी आँखों के साथ।

लेकिन उसकी चाल में वो गहराई थी — जैसे हर क़दम पर एक याद मर रही हो।

वो सीधी जाकर पुलिस के उस टेबल के पास खड़ी हो गई — जहाँ कव्या की फाइलें खुली थीं।

उसने ना कोई सवाल किया, ना कोई शिकायत।

बस टेबल को घूरती रही — जैसे शब्द अब बोझ बन गए हों।

इंस्पेक्टर कर्ण ने उसकी आँखों में देखा।

"आप उसकी बड़ी बहन हैं?"

नित्या ने धीरे से सिर हिलाया।

उसके गले से आवाज़ नहीं निकली — बस होंठ कांपे।

"वो... मेरी सबसे अच्छी दोस्त थी..."

"...मेरी बच्ची थी···"

"हर सुबह उसे जगाना... उसकी शिकायतें सुनना... और फिर उसे हँसते हुए कॉलेज भेजना..."

"अब मैं किसे जगाऊंगी?.....

वो बोलते-बोलते फूट पड़ी।

लेकिन वो आवाज़ कोई चीख नहीं थी — वो एक ऐसा टूटना था, जो सीधा दिल की गहराई से आया था।

उसने दोनों हाथ जोड़कर चेहरा ढक लिया, और धीरे से पीठ मोड़कर बैठ गई।

किसी के कंधे पर सिर रखकर रोना चाहती थी शायद —

लेकिन उसने वो भी नहीं किया।

क्योंकि जिस पर सिर रखती थी··· वो अब दुनिया में नहीं थी।

आर्यन — कव्या का मंगेतर — भी खबर सुनकर पहुँचा। सफेद कमीज़ में, थका हुआ, गाड़ी से उतरते ही दौड़ पड़ा:

उसके हाथ काँप रहे थे। इंस्पेक्टर ने उसे पानी दिया और कुर्सी पर बिठाया। फिर धीरे से पूछा:

"आप कव्या को कब से जानते हैं?"

आर्यन ने सिर झुकाया:

हमारा घर ज्यादा दूर नहीं हैं, आमने सामने ही हैं। हम साथ पढ़ते नहीं थे, लेकिन मेरे घर के पास वो अक्सर दिखती थी... फिर बातों का सिलसिला बढ़ा। मैं उसे पसंद करने लगा फिर मैं विदेश चला गया, लेकिन बातचीत जारी रही... और लौटते ही रिश्ता तय हो गया।"

इंस्पेक्टर ने आर्यन की आँखों में झाँका। भावनाएँ थीं, लेकिन कोई साफ़ सुराग नहीं। फिर पूछा:

"आखिरी बातचीत कब हुई थी?"

"शाम को... उसने कहा था कि वो थकी हुई है, लेकिन सब ठीक है। अगले हफ्ते हमारी मुलाकात होने वाली थी।"

आर्यन से उसका मोबाइल और चैट डेटा लिया गया — जाँच जारी रही, लेकिन कुछ भी स्पष्ट नहीं था।

गेस्टहाउस के पीछे का बाग़, जहाँ कव्या की लाश मिली थी, अब पुलिस की निगरानी में था। लेकिन वहाँ की हवा अब भी बोझिल थी — जैसे हर पौधा कुछ कह रहा हो, हर पत्ता किसी चीख़ को छुपा रहा हो।

इंस्पेक्टर कर्ण सिंह ने उस रात का एक नया नक़्शा तैयार करवाया। किसने कब-कब वहाँ आना-जाना किया, किसका मोबाइल कब बंद हुआ, कौन कितनी देर तक कमरे से बाहर रहा — हर डिटेल को जोड़कर वो एक खाका बना रहा था।

रात के अंधेरे में मोबाइल लोकेशन डेटा के आधार पर जो समयरेखा बनी, उसने सबको चौंका दिया:

रात 1:12 AM: राज का मोबाइल बगीचे के पीछे पिंग हुआ।

रात 1:27 AM: नेहा का मोबाइल 10 मिनट के लिए बंद हो गया था।

रात 2:04 AM: टीना का कॉल रिकॉर्ड दिखाता है कि उसने अपनी मां को कॉल किया था। पर इतनी रात को क्यों?

इंस्पेक्टर ने सभी को अलग-अलग बुलाना शुरू किया। एक-एक कर उनके चेहरों पर शिकवें गहराने लगीं। लेकिन किसी के भी बयान अब तक हत्या से मेल नहीं खा रहे थे।

राज ने स्वीकारा कि उसने झूठ कहा था कि लेटते ही उसे नींद आ गई थी, दरअसल वो डर गया था। उसे नींद नहीं आ रही थी इसलिए वो हवा लेने निकला था। और उसने ये भी कहा कि इसबार वो बिलकुल सच बोल रहा है।

नेहा का कहना था कि उसके मोबाइल में चार्ज खत्म हो जाने के वजह से मोबाइल स्विच ऑफ हो गया था, पर जैसे ही वो पानी पीने उठी, उसने फोन चार्ज पर लगा दिया था।

इंस्पेक्टर ने पता लगाया कि सच में टीना ने अपनी मां को ही कॉल किया था। पूछने पर टीना की मां ने बताया कि उसे insomnia हैं, कभी कभी तो वो पूरी रात जागती हैं और तब उसे थोड़ा anxiety feel होता हैं। उस रात भी उसके साथ वही हो रहा था था इसलिए उसने मां को कॉल किया था ।

रोहित और मानव के कॉल रिकॉर्ड से कुछ खास नहीं मिला जिसपर शक किया जाए।

गेस्टहाउस के पीछे लगे एक cctv कैमरे में अंधेरे में एक धुंधली परछाईं दिख रहीं थी।

इंस्पेक्टर ने फुटेज बार-बार देखा, लेकिन बिना किसी निष्कर्ष के। सिर्फ परछाईं थी, धुंध थी — और थी दहशत।

अध्याय 5

अगली सुबह

पुलिस स्टेशन से एक गाड़ी फिर गेस्टहाउस पहुँची।

गेस्टहाउस के लॉबी में सभी दोस्त बैठे थे —

थके हुए, चुप, और अब तक हिल नहीं पाए थे उस सदमे से।

सिर्फ कव्या की जगह खाली थी —

लेकिन उसका डर, हर कुर्सी के नीचे बैठा था।

सब दोस्तों की आँखें अधजगी थीं —

जैसे रात सोए नहीं,

बल्कि डर की गिरफ्त में पल-पल जगे हों।

इंस्पेक्टर ने कमरे में एक चक्कर लगाया।

हर एक चेहरा देखा।

और फिर अपनी टोपी उतारी, उनके हाथ में एक मोटी बंद फाइल थी —

जिस पर मोटे अक्षरों में लिखा था:

FORENSIC REPORT — PRIMARY FINDINGS

जिसे देखकर ही टीना की उंगलियाँ काँपने लगी।

नेहा की आँखें फर्श पर जमी थीं।

मानव की टांगों में हरकत दिखने लगी — जैसे कुछ छिपाना चाहता हो।

राज ने सिर्फ गहरी साँस ली।

और रोहित··· वो अब भी वही घूरती हुई नज़र रखे बैठा था —

जैसे पूछना चाहता हो: “कौन था वो?”

इंस्पेक्टर ने अब तक फाइल नहीं खोली।

वो अब बस एक चेयर खींचकर बैठ गया।

“रात बहुत लंबी थी न?”

“सन्नाटा··· अँधेरा··· और शायद कुछ ऐसी आवाजें··· जो किसी ने नहीं सुनीं,

लेकिन सबने महसूस तो जरूर की होगी।”

कोई जवाब नहीं आया।

उनकी आवाज फिर से गुंज उठी।

“क्या किसी को अब भी कुछ याद नहीं आ रहा?”

“क्या आप सब इतने ही मासूम हैं?”

“एक-एक करके बोलेंगे···

आप सब उस रात कहाँ थे,

और आपने कव्या को आख़िरी बार कब देखा?”

सब के सब झूठ बोल रहे हो लेकिन याद रखो, कानून से सच छुपाना इतना आसान नहीं होता।

टीना की बारी

“मैं··· कमरे में ही थी··· नींद नहीं आ रही थी।”

इंस्पेक्टर बोला:

“कमरे में थी··· लेकिन आपके बूट पर गार्डन की मिट्टी कैसे पहुँची?”

अब टीना काँप रही थी।

सर मैं..... गई थी गार्डन की तरफ। दरअसल मुझे नींद नहीं आ रही थी, और anxiety feel हो रही थी तो मैंने मम्मी को कॉल किया था वो तो आपको पता ही है पर उनकी नींद disturb होगी ये सोचकर मैंने उनसे ज्यादादेर बात नहीं की, और फोन काटकर मैं थोड़ी देर के लिए गार्डन की ओर टहलने चली गई थी। मैं डर गई थी इसलिए ये बात नहीं बता पाई थी आपको। सच बोल रही हूँ सर, विश्वास कीजिए मैंने उसवक्त काव्या को नहीं देखा था।

इंस्पेक्टर अब भी शांत था।

“कभी-कभी डर··· अपराध से बड़ा बोझ बन जाता है।”

इंस्पेक्टर कर्ण अब नेहा की ओर मुड़ा।

उसका चेहरा अब तक शांत था, लेकिन वो नज़रें —

जिन्हें अब तक किसी ने गौर से नहीं देखा —

उनमें कई रातें थीं जो अनकही थीं।

नेहा के पास बैठते हुए इंस्पेक्टर ने धीरे से पूछा:

“तुमने कहा था कि रात में तुम कमरे से बाहर नहीं निकली थीं···

तो फिर ये गुलाब तुम्हारे हाथ में कैसे आया?"

“नेहा··· इस गुलाब पर तुम्हारे फिंगरप्रिंट हैं।

ये वही गुलाब है जो गार्डन के कोने से मिला।

नेहा की आँखों में कुछ टूट गया था। उसकी आँखों से आँसू बह निकले।

उसने सिर झुकाया··· और टूटी हुई आवाज़ में बोली:

"हाँ सर··· मैं गई थी···

पर मैं··· मैं कोई गुनाह करने नहीं गई थी।"

"मैं राज से प्यार करती हूँ··· ये बात मैंने उसे कई बार बताई है।

लेकिन वो कभी··· मुझसे नहीं जुड़ पाया।"

(कमरे में एकदम से सन्नाटा छा गया। टीना, रोहित, मानव चौंक उठे पर राज चुप था क्योंकि उसे सच पता था।)

(नेहा की आँखों में वही रात लौट आई थी)

"जब मैंने देखा कि वो गार्डन में अकेला टहल रहा है, (राज पहले ही बता चुका है कि वो गार्डन में गया था)

तो मैंने सोचा··· शायद उस माहौल में···

मैं फिर से उसे प्रपोज करूँ···

एक आख़िरी बार··· पूरे दिल से।"

"मैंने झाड़ियों के पास से एक गुलाब तोड़ा,

और थोड़ा नर्वस होकर उसके पास गई।"

"राज··· मैं तुमसे आज भी उतना ही प्यार करती हूँ··· क्या आज भी तुम्हारा जवाब हां नहीं है?

(नेहा की आवाज़ भर्राने लगी)

"लेकिन उसने फिर से मना कर दिया।

"तुम जानती हो मैं किसी और को चाहता हूं फिर भी.....क्यों?"

"बस··· उस पल, मेरा दिल चूर हो गया।

मैंने गुलाब नीचे फेंका··· और गुस्से में उस पर चिल्लाने लगी —

'हां हां जानती हूँ, काव्या को चाहते हो न तुम, लेकिन वो तो तुम्हें घास भी नहीं देती। आर्यन राय हैं उसकी पसन्द। Abroad से लौटा इंजीनियर। तुम नहीं।

राज बुरी तरह भड़क गया और मुझपे ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा।

"मैं टूट चुकी थी, सर।

मैं भागकर अपने कमरे में लौट गई···

और रोते रोते सो गई,

वो रात सिर्फ मेरी हार की थी।"

नेहा फूट-फूट कर रो पड़ी — लेकिन इंस्पेक्टर सिंह पे उसके आँसुओं का कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने कहा:

इसका मतलब तुम्हें काव्या से जलन होती थी, और काव्या अगर तुम्हारे रास्ते से हट जाती तो तुम्हें राज मिल जाता तो कहीं तुमने.....

उनका इतना कहना ही था कि नेहा बोल पड़ी:

नहीं नहीं सर, मुझे काव्या से कोई शिकायत नहीं थी। काव्या ने मुझसे राज को नहीं छीना था, वो तो कभी राज को घास तक नहीं डालती थी। वो आर्यन के साथ बहुत खुश थी। और सच कहूं तो इससे मुझे सुकून मिलता था कि उसने राज को कभी पसंद नहीं किया । मैंने उसे नहीं मारा सर, मैं किसी को भी नहीं मार सकती।

(नेहा रोती हुई कहती जा रहीं थीं।)

इंस्पेक्टर कर्ण ने अब राज की ओर देखा।

राज — सबसे शांत, सबसे संयमित दिखने वाला लड़का,

लेकिन उसकी आँखों में एक भारीपन था

जो बाकी सभी से अलग था।

इंस्पेक्टर सिंह : क्या ये सच हैं मिस्टर राज? आप काव्या को चाहते थे?

अब राज के भीतर कुछ दरकने लगा।

उसने एक लंबा मौन लिया... और फिर कहा —

" हां मैं उससे... प्यार करता था···" । कॉलेज में मेरे सारे दोस्त ये बात जानते थे, खुद काव्या भी।

(गेस्ट हाउस में मौजूद सभी की दृष्टि राज पर थी।)

राज बोले जा रहा था:

"कव्या को देखना... उसके पास होना...

मेरे लिए सब कुछ था··· लेकिन .....

"वो आर्यन को चाहती थी।

वो उसे लेकर खुश थी···

और मैं? मैं सिर्फ एक अच्छा दोस्त बनकर रह गया···"

कहते कहते उसका गला रुंध गया।

अब इंस्पेक्टर झुककर उसकी आँखों में देख रहा था।

उसकी नज़रें अब सख़्त थीं —

और शब्द नर्म, लेकिन चालाक।

"प्यार अगर बहुत गहरा हो···

और सामने वाला किसी और के साथ हो···

तो कभी-कभी इंसान अपने आप पर भी भरोसा खो देता है।"

"क्या आपने... कुछ ऐसा किया,

जो अब आपको खेद बनकर निगल रहा है, राज?”

राज चौंका।

वो काँप गया — लेकिन खुद को सम्भाला।

“नहीं… नहीं किया···

मैं उससे प्यार करता था,

उसे तकलीफ़ नहीं दे सकता था···”

इंस्पेक्टर बस सिर हिलाकर वापस अपनी सीट पर बैठ गया।

“ठीक है, राज।

फिलहाल आपका बयान दर्ज हो गया है···

लेकिन याद रखिए — कभी-कभी वो लोग सबसे ज़्यादा छुपाते हैं,

जो सबसे शांत होते हैं।”

राज अब भी वहीं बैठा था।

अधूरी मोहब्बत की राख,

उसकी आँखों में अब भी धुआँ बनकर भटक रही थी।

इंस्पेक्टर अब राज की तरफ से अपनी नज़रें मोड़कर मानव की ओर बढ़ा।

कमरे में एक अजीब सी खामोशी थी —

जैसे सब जानते हों कि अब बारी-बारी से परतें उतरेंगी।

“

“तो मानव, रात कहाँ थे आप?”

“मैं… मैं अपने कमरे में था।

बाहर जाने की कोई ज़रूरत नहीं थी... मैं थका हुआ था।”

इंस्पेक्टर ने बिना मुस्कुराए कहा:

“बिलकुल। थक गए होंगे।

लेकिन ये बताइए — आपकी जैकेट की जेब से ये टूटा हुआ सिगरेट फिल्टर कैसे मिला?

और गार्डन के पीछे जो राख पड़ी थी,

उसकी गंध उसी ब्रांड से मिलती है जो आप पीते हैं — Classic Milds, है न?”

मानव का चेहरा एक पल को पीला पड़ गया।

"अब भी कहेंगे कि आप कमरे से बाहर नहीं गए थे?"

मानव ने एक लंबी साँस ली··· फिर सिर झुका लिया।

कुर्सी की कोर पकड़कर बोला — रुंधे गले से:

"हाँ सर··· मैं गया था।

झूठ बोलकर कुछ नहीं मिलेगा···"

सबकी नज़रें मानव पर टिक गईं।

अब उसकी बातों में सच्चाई थी··· और थोड़ा पछतावा भी।

मानव (धीरे, सच्चे लहजे में):

रात के करीब कितने बजे होंगे ये याद नहीं,

मैं कमरे में था, नींद नहीं आ रही थी।

तभी खिड़की से कुछ हल्की आवाज़ें आईं···

जैसे कोई किसी पर चिल्ला रहा हो।"

"मैंने पर्दा हटाया — देखा, गार्डन की तरफ़ कुछ हलचल है।

किसी की आवाज़ थी — गुस्से भरी।"

"मैं धीरे से बाहर निकला

और गार्डन के एक कोने में छिपकर देखा।"

"वहाँ राज और नेहा थे।

(मानव की आँखें वो दृश्य याद करते हुए)

"लेकिन राज उस पर चिल्ला रहा था…

वो क्या कह रहा था मुझे कुछ साफ सुनाई नहीं दे रहा था।

"मैं… चुपचाप वहाँ खड़ा रहा।

तभी मैंने जेब से सिगरेट निकाली और जला ली।"

"पर थोड़ी ही देर में नेहा रोती हुई कमरे की तरफ भागी।

और… मैं डर गया कि कहीं कोई देख न ले।

मैंने वो सिगरेट वहीं फेंकी और चुपचाप अपने कमरे में चला गया।"

इंस्पेक्टर (गहराई से देखते हुए):

"तो आपने नेहा को रोते हुए भागते देखा…

लेकिन उसके बाद… आपने और कुछ नहीं देखा?"

मानव ने इंकार में सिर हिलाया।

"नहीं सर… उसके बाद कुछ नहीं…

इंस्पेक्टर की नज़र अब नीली रौशनी में चमक रही थी:

रोहित को छोड़कर बाकी सभी गार्डन की तरफ गए थे।

हर चेहरा झूठ की छाया में भीग चुका था।

इंस्पेक्टर ने अब धीमे से अपनी फाइल बंद की, और बोला:

"फॉरेंसिक रिपोर्ट बहुत कुछ कहती है —

लेकिन उससे पहले, आप सब ने बहुत कुछ छुपाया है।

और डर अब बोलने लगा है।"

अध्याय 6

गेस्टहाउस के मुख्य हॉल में एक अजीब-सी चुप्पी थी।

हर चेहरा बुझा हुआ, हर नज़र असहज।

इंस्पेक्टर ने धीरे-धीरे टेबल पर फिर से वहीं बंद फाइल रखी।

जिस पर लिखा था:

"Case: Kavya Verma | Preliminary Forensic Observation"

उसने कमरे में मौजूद सभी को देखा —

नेहा, टीना, मानव, राज, रोहित, और कोने में बैठे आर्यन

– और फिर कव्या के माता-पिता और नित्या की ओर मुड़ा।

“ये रिपोर्ट बहुत कुछ नहीं कहती···

लेकिन जो कहती है — वो चुप नहीं बैठने देगी।”

कमरा सन्न हो गया।

कमरे में जैसे हवा ही थम गई।

अब कोई कुछ नहीं बोल रहा था।

सबूत किसी एक को नहीं, सब को बेनकाब कर रहे थे।

कव्या की माँ की सिसकियाँ तेज़ हो गईं।

नित्या की आँखों में आँसू थे —

लेकिन चेहरा बिल्कुल शांत।

“तुम सब वहाँ गए थे?”

कव्या के पिता गरज उठे।

“फिर क्यों नहीं बताया किसी ने? क्या छुपा रहे हो?”

कोई कुछ नहीं बोला।

इंस्पेक्टर ने कर्क आवाज में कहा: “मैं जानता हूँ — इस कमरे में बैठे लोगों में से ही कोई कातिल है।

लाख छुपाने की कोशिश कर लो

लेकिन याद रखो — कानून की नज़र से कोई गुनहगार आज तक बच नहीं पाया हैं।

अब एक-एक सच बाहर आएगा —

या तो जुबान से··· या सबूत से।”

गेस्टहाउस की सुबह अब तक की सबसे भारी थी।

कमरे भरे थे, लेकिन हर चेहरा खाली —

जैसे सब कुछ कहने को तैयार था, लेकिन एक डर सबके होंठों को सील चुका था।

इंस्पेक्टर कर्ण सिंह अब उस मोड़ पर था —

जहाँ हर झूठ की उम्र खत्म हो चुकी थी।

उसने गेस्टहाउस की लॉबी में सबको एक बार फिर बुलाया।

माँ-पापा भी अब अपने आँसुओं के साथ शांत हो चुके थे।

आर्यन की आँखों में अब भी कोई जवाब बाकी था।

और नित्या — हमेशा की तरह संयमित, शांत — पर आज उसकी साँसें तेज़ थीं।

इंस्पेक्टर कर्ण ने एक सफेद लिफाफा खोला।

भीतर से निकली एक रिपोर्ट —

Forensic Analysis — Kavya Verma: Under Fingernail Scrape

उसने कागज़ को धीरे से टेबल पर रखा।

सबका ध्यान अब उस एक पन्ने पर था।

इंस्पेक्टर ने गहरी साँस ली और कहा:

"हमने मृतिका कव्या वर्मा की उंगलियों के नीचे से ऊतक (skin particles) प्राप्त किया था,

जो उसकी मौत से पहले संघर्ष का संकेत देता है।"

"DNA रिपोर्ट बता रही है कि ये ऊतक··· एक महिला का है।"

कमरे में एकदम सन्नाटा।

टीना और नेहा संदेहपूर्ण नजरों से एक-दूसरे की ओर देखने लगीं।

इंस्पेक्टर की आवाज़ अब और तीखी थी:

"हमने गुप्त रूप से आप सबका DNA सैंपल लिया था — पानी के गिलास, ब्रश, रूम टिशू··· सब कुछ से।"

"और अब··· रिज़ल्ट हमारे पास है।"

इंस्पेक्टर ने कागज़ उठाया।

उसकी आँखें सबके चेहरों पर घूम रही थीं।

फिर उसने ज़ोर से कहा —

"Nitya Verma... you are under arrest for the murder of your sister Kavya Verma."

जैसे किसी ने समय को रोक दिया हो।

माँ चीख पड़ीं — "नहीं! ये नहीं हो सकता!"

आर्यन का मुँह खुला का खुला रह गया।

टीना की उँगलियाँ काँप रही थीं।

राज उठने ही वाला था कि उसके घुटने जवाब दे गए।

लेकिन नित्या···

वो एकदम चुप थी।

इंस्पेक्टर ने दो कांस्टेबल को इशारा किया —

वे नित्या के पास पहुँचे।

उसने कोई विरोध नहीं किया।

बस अपनी जगह खड़ी रही।

इंस्पेक्टर ने पूछा:

"कुछ कहना चाहेंगी आप, नित्या जी?"

नित्या की आँखों में अब वो शून्यता नहीं थी —

अब वहाँ लावा था, जो वर्षों से दफ़न था।

उसने पहली बार आवाज़ उठाई —

कमज़ोर, लेकिन धारदार।

“मैंने उसे मारा··· हाँ....

मैं उसे अपनी बहन नहीं जिंदगी मानती थी और वो बड़े आराम से मुझे धोखा दिए जा रहीं थी।

सब स्तब्ध।

इंस्पेक्टर ने कहा — “पूरा सच बताइए, यहाँ और अभी।”

अध्याय 7

नित्या ने कहा:

"आर्यन···

वो नाम आज भी मेरी धड़कनों में बसा है···

उसने मुझसे कहा था — कि वो किसी और को चाहता है।

पर वो नाम नहीं बताया···

मैं रोई··· टूटी··· मेरी दुनिया खत्म हो गई··· लेकिन चुप रही।

"मैंने तय कर लिया था कि कभी शादी नहीं करूँगी।

और फिर कुछ महीने बाद···

मेरी कव्या··· मेरी जान···

उसने मुझे बताया — 'दीदी, आप आर्यन को तो जानती ही हो न··· उसने मुझे प्रपोज़ किया···'

वो काफी खुश थी।

मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक गई थी।

मेरी बहन··· मेरी वही बहन··· जिसे मैंने चलना सिखाया था,

वो... मेरी ही मोहब्बत का घर बन गई थी।

मैंने कभी उससे कुछ नहीं कहा···

लेकिन हर बार जब वो आर्यन से बात करती थी···

मेरे अंदर कुछ मरता था।

और जब उसकी सगाई हुई…

उस रात मैं सो नहीं पाई।

मुझे ऐसा लगा कि मेरी रूह… मुझसे मेरी ही बहन ने छीन ली है।

और फिर जब वो टूर पर गई तो.....

इंस्पेक्टर ने अब आराम से पूछा:

"कहिए नित्या…

कैसे किया आपने ये सब?"

नित्या की आँखें अब काँप रही थीं —

जैसे बाँध टूटने वाला हो।

फ्लैशबैक: वो रात… मौत की परछाईं।

वक़्त: रात के 1:12 AM

स्थान: कर्णपुर गेस्टहाउस के पीछे का बगीचा

चाँद बादलों के पीछे छिपा था।

हवा में बर्फ जैसा सन्नाटा था।

गेस्टहाउस के सभी कमरों की लाइटें बुझ चुकी थीं।

लेकिन पीछे की झाड़ियों में कोई आहट थी…

एक साया — सावधानी से चलता हुआ।

पैरों में रबर सोल वाले सॉफ्ट बूट्स…

हाथों में काले लेदर ग्लव्स…

चेहरे पर हल्का दुपट्टा लिपटा हुआ…

उसका पूरा चेहरा छिपा था,

लेकिन आंखें — जैसे पत्थर सी कठोर और पथरीली थीं।

वो थी — नित्या वर्मा।

धीरे-धीरे, वह गेस्टहाउस के पीछे वाले बगीचे की तरफ़ झाड़ियों में से होकर आती है।

उसके कदमों की आहट पत्तियों में दब जाती है।

वो CCTV blind spot से होकर सीधी उस खिड़की के नीचे पहुंच जाती है —

जिस कमरे में काव्या सोई रहती हैं।

उस कमरे की खिड़की पर वो हल्के से टक··· टक··· करती है।

राज काव्या के बेड से काफी दूर एक सिंगल बेड पर सोया हुआ था और गहरी नींद में भी था, इसलिए वो नहीं जागता।

पर काव्या की नींद खुल जाती हैं, क्योंकि वो खिड़की के पास ही सोई हुई थी।

खिड़की खुलती है।

कव्या थकी आँखों से झाँकती है।

उसे दिखता कुछ नहीं — बस अंधेरे में एक जानी-पहचानी आवाज़ फुसफुसाती है···

“कव्या··· मैं हूँ··· दीदी।”

कव्या चौक जाती है।

“दीदी? आप यहाँ? इस वक़्त?” सब ठीक तो हैं ना?

“जल्दी पीछे की तरफ आ··· किसी को मत बताना···

एक ज़रूरी बात है···

कव्या सोच में पड़ जाती है, पर दीदी की आवाज़ में उसे कुछ दर्द सा महसूस हुआ।

वो धीरे-धीरे चादर ओढ़कर कमरे से निकलती है···

बिना किसी को बताए — चप्पलों के बिना — सीधे गार्डन की ओर।

गार्डन के कोने में नित्या खड़ी थी।

चेहरा अब भी दुपट्टे से ढँका हुआ।

लेकिन अब वो दुपट्टा धीरे से नीचे किया — और जैसे ही कव्या पास आई —

"दीदी··· आप ठीक हैं न?"

नित्या कुछ पल चुप रही।

फिर उसने धीरे से कहा:

"तेरी सगाई में उस दिन बहुत लोग आए थे···

और बहुत शोर था···

पर अंदर एक आवाज़ मर रही थी, कव्या···"

कव्या परेशान हो गई।

"क्या हुआ दीदी? आप ठीक तो हैं? चलिए न, अंदर चलिए–

नित्या की आँखों में आँसू थे।

"तू जानती भी है, तू किससे प्यार करती है?"

"तू जानती है, वो लड़का··· जिसके लिए मैंने अपनी ज़िंदगी छोड़ी··· वो आर्यन था···!"

कव्या जड़ हो गई।

"क्या···? आर्यन···?"

“हाँ··· लेकिन तूने तो मुझसे कभी पूछा ही नहीं··· तूने तो मेरी जगह ले ली।
”

और तभी···

नित्या ने अपना हाथ पीछे किया —

जहाँ एक धारदार छोटा चाकू उसकी जैकेट में छुपा था।

वो आगे बढ़ी···

एक ही झटके में, नित्या ने चाकू कव्या के गले पर फेरना चाहा परन्तु काव्या ने उसके हाथ पकड़ लिए और उसे धक्का दे दिया। फिर थोड़ी देर धक्का मुक्की होने के बाद..... नित्या गुस्से से उसकी तरफ दौड़ी और इससे पहले कि काव्या संभल पाती नित्या ने पूरे ज़ोर के साथ चाकू उसके गले में चला दिया।

कव्या का मुँह खुला —

वो चीख नहीं पाई।

उसकी आँखों में दर्द और भरोसे का टकराव था —

एक ही सवाल: "आपने ऐसा क्यों किया··· दीदी?"

नित्या ने उसे ज़मीन पर धीरे से लिटाया —

ताकि आवाज़ न हो।

कव्या की साँसें कुछ पलों में थम गईं।

नित्या वहीं बैठ गई।

बहन की लाश के पास —

उसका खून ग्लव्स पर था —

लेकिन चेहरा भावशून्य।

"तूने मेरा प्यार मुझसे छीन लिया···

मैंने हमेशा तुझे इतना प्यार दिया और तूने मुझसे मेरे आर्यन को छीन लिया। क्यों किया काव्या? ऐसा नहीं करती तो तुझे मरना नहीं पड़ता। हैं ना बहना?

इतना कहकर वो उठी, फिर धीरे से उसने अपना चाकू धोया, ग्लव्स उतारे, उन्हें एक थैले में डाला, और सबूत छुपाकर उसी CCTV blind spot से बाहर निकली।

वो उसी गाड़ी में बैठी, जो उसने पहाड़ी मोड़ के पीछे छिपा रखी थी।

(वर्तमान: टूटती परतें···)

गेस्ट हाउस के कमरे में अब कोई आवाज़ नहीं थी।

नित्या की आँखें अब भी नम थीं —

लेकिन उसमें पश्चाताप था, वहशत नहीं।

इंस्पेक्टर ने उसे हथकड़ी पहनाई।

"आपका इक़बाल-ए-जुर्म रिकॉर्ड हो चुका है।

अदालत तय करेगी अब इंसाफ़ का रास्ता।"

माँ वहीं फर्श पर गिर पड़ीं।

आर्यन··· वो कुछ कह नहीं पा रहा था।

राज ने बस इतना कहा:

"काश··· ये सब होने से पहले··· किसी ने कुछ कह दिया होता।"

अंतिम दृश्य:

नित्या को ले जाया जा रहा है।

गाड़ी में बैठते समय उसने एक आखिरी बार

उस पहाड़ी कस्बे की ओर देखा —

जहाँ बचपन था, बहन थी··· और उसका खोया प्यार।

फिर गाड़ी चल दी।

उस कस्बे में अब हमेशा के लिए एक सन्नाटा रह गया —

जो शायद कभी न टूटे।